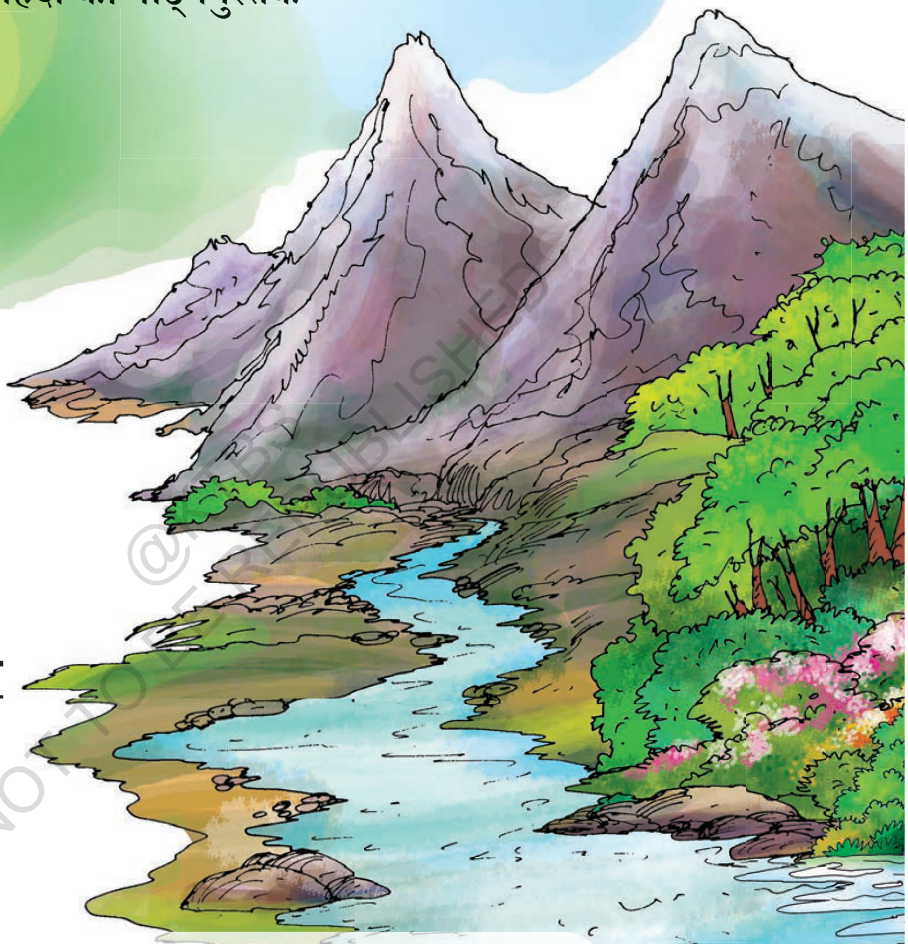
Government of Karnataka

मल्हार

कक्षा 8 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक



8

Part - II

0871

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

विद्यया ऽ मृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

Karnataka Textbook Society (R.)
6th Cross, Malleshwaram, Bengaluru-560 003



विषय-क्रम

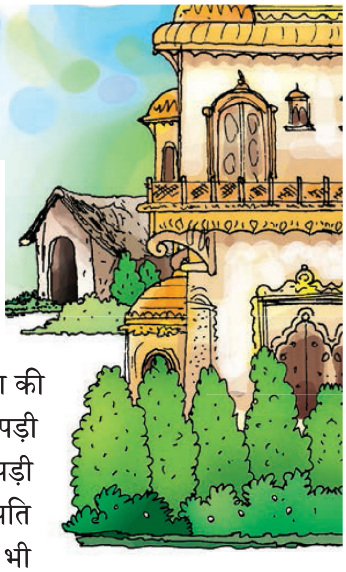
6.	एक टोकरी भर मिट्टी (कहानी)	*माधवराव सप्रे*	01
7.	मत बाँधो (कविता)	*महादेवी वर्मा*	16
8.	नए मेहमान (एकांकी)	*उदयशंकर भट्ट*	30
9.	आदमी का अनुपात (कविता)	*गिरिजा कुमार माथुर*	51
10.	तरुण के स्वप्न (उद्‌बोधन)	*सुभाषचंद्र बोस*	65
	भारति, जय, विजय करे! (पढ़ने के लिए)	*सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'*	
	'ब्रेल भारती' हिंदी वर्ण व गिनती		76

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

6 एक टोकरी भर मिट्टी

0871CH06





किसी श्रीमान् ज़मींदार के महल के पास एक गरीब, अनाथ वृद्धा की झोंपड़ी थी। ज़मींदार साहब को अपने महल का अहाता उस झोंपड़ी तक बढ़ाने की इच्छा हुई। वृद्धा से बहुतेरा कहा कि अपनी झोंपड़ी हटा ले, पर वह तो कई ज़माने से वहीं बसी थी। उसका प्रिय पति और इकलौता पुत्र भी उसी झोंपड़ी में मर गया था। पतोहू भी एक पाँच बरस की कन्या को छोड़कर चल बसी थी। अब यही उसकी पोती इस वृद्धावस्था में एकमात्र आधार थी। जब उसे अपनी पूर्वस्थिति की याद आ जाती तो मारे दुख के फूट-फूट कर रोने लगती थी और जब से उसने अपने श्रीमान् पड़ोसी की इच्छा का हाल सुना, तब से वह मृतप्राय हो गई थी। उस झोंपड़ी में उसका ऐसा कुछ मन लग गया था कि बिना मरे वहाँ से वह निकलना ही नहीं चाहती थी। श्रीमान् के सब प्रयत्न निष्फल हुए, तब वे अपनी ज़मींदारी चाल चलने लगे। बाल की खाल निकालने वाले वकीलों की थैली गरम कर उन्होंने अदालत से उस झोंपड़ी पर अपना कब्ज़ा कर लिया और वृद्धा को वहाँ से निकाल दिया। बिचारी अनाथ तो थी ही, पास-पड़ोस में कहीं जाकर रहने लगी।



एक दिन श्रीमान् उस झोंपड़ी के आस-पास टहल रहे थे और लोगों को काम बतला रहे थे कि इतने में वह वृद्धा हाथ में एक टोकरी लेकर वहाँ पहुँची। श्रीमान् ने उसको देखते ही अपने नौकरों से कहा कि उसे यहाँ से हटा दो। पर वह गिड़गिड़ाकर बोली, "महाराज, अब तो झोंपड़ी तुम्हारी ही हो गई है। मैं उसे लेने नहीं आई हूँ। महाराज क्षमा करें तो एक विनती है।" ज़मींदार साहब के सिर हिलाने पर उसने कहा, "जब से यह झोंपड़ी छूटी है, तब से मेरी पोती ने खाना-पीना छोड़ दिया है। मैंने बहुत कुछ समझाया, पर वह एक नहीं मानती। यही कहा करती है कि अपने घर चल, वहीं रोटी खाऊँगी। अब मैंने यह सोचा कि इस झोंपड़ी में से एक टोकरी भर मिट्टी लेकर उसी

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

का चूल्हा बनाकर रोटी पकाऊँगी। इससे भरोसा है कि वह रोटी खाने लगेगी। महाराज कृपा करके आज्ञा दीजिए तो इस टोकरी में मिट्टी ले जाऊँ!" श्रीमान् ने आज्ञा दे दी।

वृद्धा झोंपड़ी के भीतर गई। वहाँ जाते ही उसे पुरानी बातों का स्मरण हुआ और उसकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगी। अपने आंतरिक दुख को किसी तरह सँभाल कर उसने अपनी टोकरी मिट्टी से भर ली और हाथ से उठाकर बाहर ले आई। फिर हाथ जोड़कर श्रीमान् से प्रार्थना करने लगी कि, "महाराज, कृपा करके इस टोकरी को ज़रा हाथ लगाइए जिससे कि मैं उसे अपने सिर पर धर लूँ।" ज़मींदार साहब पहले तो बहुत नाराज हुए। पर जब वह बार-बार हाथ जोड़ने लगी और पैरों पर गिरने लगी तो उनके भी मन में कुछ दया आ गई। किसी नौकर से न कहकर आप ही स्वयं टोकरी उठाने को आगे बढ़े। ज्यों ही टोकरी को हाथ लगाकर ऊपर उठाने लगे त्यों ही देखा कि यह काम उनकी शक्ति के बाहर है। फिर तो उन्होंने अपनी सब ताकत लगाकर टोकरी को उठाना चाहा, पर जिस स्थान पर टोकरी रखी थी, वहाँ से वह एक हाथ भी ऊँची न हुई। वह लज्जित होकर कहने लगे कि, "नहीं, यह टोकरी हमसे न उठाई जाएगी।"

यह सुनकर वृद्धा ने कहा, "महाराज, नाराज न हों... आपसे तो एक टोकरी भर मिट्टी उठाई नहीं जाती और इस झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी है। उसका भार आप जन्म-भर कैसे उठा सकेंगे? आप ही इस बात पर विचार कीजिए।"

ज़मींदार साहब धन-मद से गर्वित हो अपना कर्तव्य भूल गए थे पर वृद्धा के उपर्युक्त वचन सुनते ही उनकी आँखें खुल गईं। कृतकर्म का पश्चाताप कर उन्होंने वृद्धा से क्षमा माँगी और उसकी झोंपड़ी वापस दे दी।

— *माधवराव सप्रे*

@KSBS NOT TO BE REPUBLISHED



लेखक से परिचय



(1871–1926)

हिंदी की प्रारंभिक कहानियों में 'एक टोकरी भर मिट्टी' का भी उल्लेख आता है। इसके लेखक माधवराव सप्रे हैं। ऐसा माना जाता है कि ये लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की प्रेरणा से हिंदी में आए थे। इनकी मातृभाषा मराठी थी। इनका जन्म दमोह (मध्य प्रदेश) में हुआ था। इन्होंने लोकमान्य तिलक के चर्चित ग्रंथ *गीता-रहस्य* का मराठी से हिंदी में अनुवाद किया था। *स्वदेशी आंदोलन और बायकॉट* इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।

'एक टोकरी भर मिट्टी' जैसी कहानियाँ केवल घटनाएँ नहीं सुनातीं, बल्कि मिट्टी से उठते हुए उन प्रश्नों को उठाती हैं जो हमारे सामाजिक ताने-बाने में गाँठ बनकर अटके हैं।

पाठ से

आइए, अब हम इस पाठ पर विस्तार से चर्चा करें। नीचे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।



मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

(1) ज़मींदार को झोंपड़ी हटाने की आवश्यकता क्यों लगी?

- झोंपड़ी जर्जर हो चुकी थी
- झोंपड़ी रास्ते में बाधा थी
- वह अहाते का विस्तार करना चाहता था
- वृद्धा से उसका कोई पुराना झगड़ा था

(2) वृद्धा ने मिट्टी ले जाने की अनुमति कैसे माँगी?

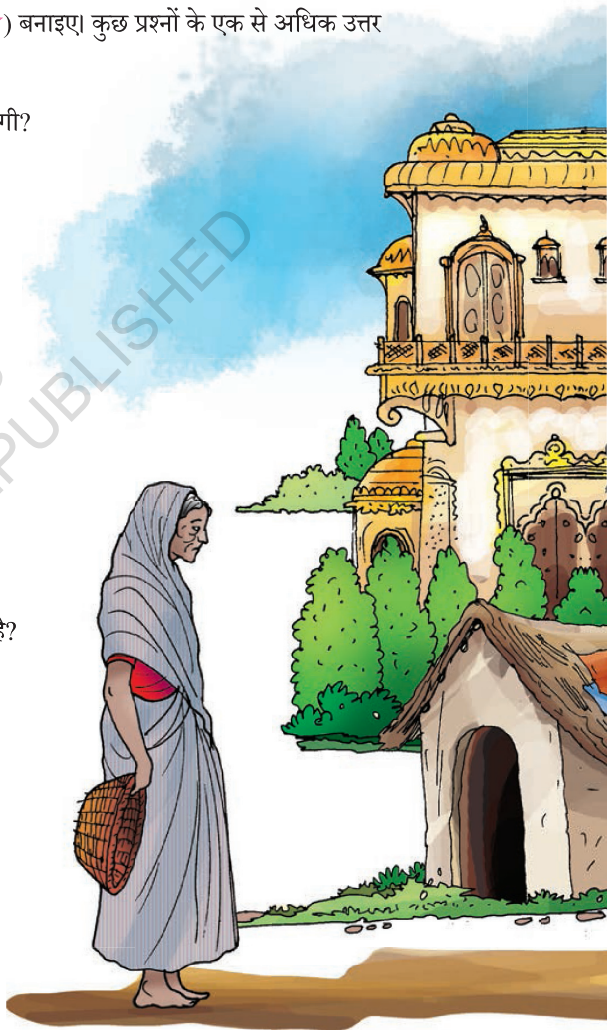
- क्रोध और झगड़ा करके
- अदालत से अनुमति लेकर
- विनती और नम्रता से
- चुपचाप उठाकर ले गई

(3) वृद्धा की पोती का व्यवहार किस भाव को दर्शाता है?

- दया
- लगाव
- गुस्सा
- डर

(4) कहानी का अंत कैसा है?

- दुखद
- सुखद
- प्रेरणादायक
- सकारात्मक



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?





मिलकर करें मिलान

(क) पाठ में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं। प्रत्येक वाक्य के सामने दो-दो निष्कर्ष दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सर्वाधिक उपयुक्त निष्कर्षों से मिलाइए।

क्रम	वाक्य	निष्कर्ष
1.	अब यही उसकी पोती इस वृद्धाकाल में एकमात्र आधार थी।	• वृद्धावस्था में वृद्धा का सहारा उसकी पोती ही थी। • वृद्धावस्था में पोती का सहारा वृद्धा थी।
2.	बाल की खाल निकालने वाले वकीलों की थैली गरम कर उन्होंने अदालत से उस झोंपड़ी पर अपना कब्जा कर लिया।	• ज़मींदार ने वकीलों से सलाह लेकर झोंपड़ी पर न्यायपूर्वक कब्जा किया। • ज़मींदार ने वकीलों को पैसे देकर कानूनी दावपेंच से झोंपड़ी पर कब्जा किया।
3.	आपसे एक टोकरी भर मिट्टी नहीं उठाई जाती और इस झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी है।	• वृद्धा ने ज़मींदार को कमज़ोर साबित करने के लिए टोकरी उठाने को कहा। • वृद्धा ने टोकरी को प्रतीक बनाकर ज़मींदार को उसके अन्याय का अनुभव कराया।
4.	ज़मींदार साहब धन-मद से गर्वित हो अपना कर्तव्य भूल गए थे।	• धन और अहंकार ने ज़मींदार को मानवीयता और करुणा से दूर कर दिया था। • संपत्ति के घमंड को भूलकर ज़मींदार अपने कर्तव्यों को पूरा कर रहे थे।
5.	कृतकर्म का पश्चाताप कर उन्होंने वृद्धा से क्षमा माँगी।	• वृद्धा ने अपने व्यवहार पर पछताकर ज़मींदार से क्षमा माँगी। • अपने द्वारा किए अन्याय पर पछताकर ज़मींदार ने क्षमा माँगी।
6.	उसका भार आप जन्म-भर कैसे उठा सकेंगे?	• वृद्धा ने प्रतीकात्मक रूप से कहा कि अन्याय का नैतिक भार उठाना आसान नहीं है। • वृद्धा ने ज़मींदार की उम्र और शक्ति पर व्यंग्य करते हुए यह बात कही।
7.	कृपा करके इस टोकरी को ज़रा हाथ लगाइए जिससे कि मैं उसे अपने सिर पर धर लूँ।	• वृद्धा ने चतुराई से ज़मींदार को शर्मिंदा करने की योजना बनाई। • वृद्धा ने टोकरी उठाने में सहायता के लिए ज़मींदार से विनम्र निवेदन किया।
8.	उसे पुरानी बातों का स्मरण हुआ और उसकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगी।	• झोंपड़ी में प्रवेश करते ही वृद्धा पुराने दिनों के कारण भावुक हो गई। • झोंपड़ी में जाकर वृद्धा डर गई कि ज़मींदार उसे फिर से बाहर निकाल देगा और रोने लगी।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



(ख) अपने मित्रों के उत्तर से अपने उत्तर मिलाइए और चर्चा कीजिए कि आपने कौन-से निष्कर्षों का चुनाव किया है और क्यों?



पंक्तियों पर चर्चा

पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए।

(क) "आपसे एक टोकरी भर मिट्टी नहीं उठाई जाती और इस झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी है। उसका भार आप जन्म-भर कैसे उठा सकेंगे?"

(ख) "ज़मींदार साहब पहले तो बहुत नाराज हुए, पर जब वह बार-बार हाथ जोड़ने लगी और पैरों पर गिरने लगी तो उनके भी मन में कुछ दया आ गई। किसी नौकर से न कहकर आप ही स्वयं टोकरी उठाने को आगे बढ़े। ज्यों ही टोकरी को हाथ लगाकर ऊपर उठाने लगे त्यों ही देखा कि यह काम उनकी शक्ति के बाहर है।"



सोच-विचार के लिए



पाठ को पुन: ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए।

(क) आपके विचार से कहानी का सबसे प्रभावशाली पात्र कौन है और क्यों?

(ख) वृद्धा की पोती ने खाना क्यों छोड़ दिया था?

(ग) ज़मींदार ने झोंपड़ी पर कब्जा कैसे किया?

(घ) "महाराज क्षमा करें तो एक विनती है। ज़मींदार साहब के सिर हिलाने पर उसने कहा..."। यहाँ ज़मींदार द्वारा सिर हिलाने की इस क्रिया का क्या अर्थ है?

(ङ) "किसी नौकर से न कहकर आप ही स्वयं टोकरी उठाने आगे बढ़े।" यहाँ ज़मींदार के व्यवहार में परिवर्तन का आरंभ दिखाई देता है। पहले ज़मींदार का व्यवहार कैसा था? इस घटना के बाद उसके व्यवहार में क्या परिवर्तन आया?

(च) "उन्होंने वृद्धा से क्षमा माँगी और उसकी झोंपड़ी वापस दे दी।" ज़मींदार ने ऐसा क्यों किया?



अनुमान और कल्पना से



(क) यदि वृद्धा की पोती ज़मींदार से स्वयं बात करती तो वह क्या कहती?

(ख) यदि आप ज़मींदार की जगह होते तो क्या करते?

(ग) ज़मींदार को टोकरी उठाने में सफलता क्यों नहीं मिली होगी?

(घ) "झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी है..."। यहाँ केवल मिट्टी की बात की जा रही है या कुछ और बात भी छिपी है?

(संकेत— मिट्टी किस बात का प्रतीक हो सकती है? मिट्टी के बहाने वृद्धा क्या कहना चाहती है?)

@KIRS NOT TO BE REPUBLISHED

(ङ) यह कहानी आज से लगभग सवा सौ साल पहले लिखी गई थी। इस कहानी के आधार पर बताइए कि भारत में स्त्रियों को किन-किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता होगा?



बदली कहानी



कल्पना कीजिए कि कहानी कैसे आगे बढ़ती—

- यदि ज़मींदार टोकरी उठाने से मना कर देता
- यदि ज़मींदार टोकरी उठा लेता
- यदि ज़मींदार मिट्टी देने से मना कर देता
- यदि ज़मींदार एक स्त्री होती
- यदि पोती ज़मींदार से अपनी झोंपड़ी वापस माँगती

अपने समूह के साथ इनमें से किसी एक स्थिति को चुनकर चर्चा कीजिए। इस बदली हुई कहानी को मिलकर लिखिए।



'कि' और 'की' का उपयोग

इन वाक्यों में रेखांकित शब्दों के प्रयोग पर ध्यान दीजिए—

इससे भरोसा है <u>कि</u> वह रोटी खाने लगेगी।	यहाँ "कि" एक संयोजक के रूप में प्रयोग हुआ है। संयोजक का अर्थ होता है मिलाने वाला। संयोजक शब्दों या वाक्यों को जोड़ने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। यह हमें बताता है— क्या कहा गया, क्या सोचा गया, क्या देखा गया आदि।
ज़मींदार के महल के पास एक गरीब, अनाथ वृद्धा <u>की</u> झोंपड़ी थी।	यहाँ "की" एक संबंधसूचक कारक शब्द है। इसका प्रयोग संज्ञा या सर्वनाम का किसी अन्य शब्द के साथ संबंध बताने के लिए किया जाता है। अन्य संबंधकारक शब्द हैं— का और के।

अब नीचे दिए गए वाक्यों में इन दोनों शब्दों का उपयुक्त प्रयोग कीजिए—

1. वृद्धा ने कहा _____ वह झोंपड़ी को लेने नहीं आई है।
2. वह अपनी पोती _____ चिंता में दुखी हो गई थी।
3. वृद्धा ने प्रार्थना _____ _____ टोकरी को ज़रा हाथ लगाइए।
4. पोती हमेशा कहती थी _____ वह अपने घर में ही खाना खाएगी।
5. झोंपड़ी _____ मिट्टी से वृद्धा चूल्हा बनाना चाहती थी।
6. उसे विश्वास था _____ मिट्टी का चूल्हा देखकर पोती खाना खाने लगेगी।

© KIBS NOT TO BE REPUBLISHED

7. वृद्धा _____ आँखों से आँसुओं _____ धारा बहने लगी।

8. उसने यह सोचा _____ झोंपड़ी से मिट्टी ले जाकर चूल्हा बनाऊँगी।

9. वृद्धा के मन _____ पीड़ा उसकी बातों में झलक रही थी।

10. ज़मींदार इतने लज्जित हुए _____ टोकरी उठाने की बात मान ली।

11. उस झोंपड़ी _____ हर दीवार वृद्धा _____ यादों से भरी थी।



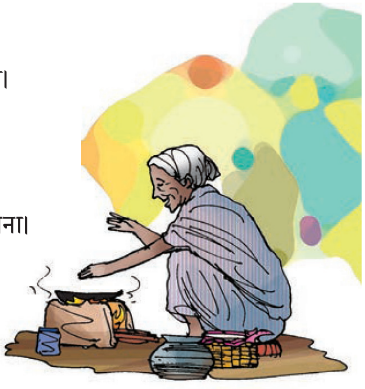
मुहावरे

"बाल की खाल निकालने वाले वकीलों की थैली गरम कर उन्होंने अदालत से झोंपड़ी पर अपना कब्जा कर लिया।"

(क) इस वाक्य में मुहावरों की पहचान करके उन्हें रेखांकित कीजिए।

(ख) 'बाल' शब्द से जुड़े निम्नलिखित मुहावरों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

- बाल बाँका न होना— कुछ भी कष्ट या हानि न पहुँचना। पूर्ण रूप से सुरक्षित रहना।
- बाल बराबर— बहुत सूक्ष्म। बहुत महीन या पतला।
- बाल बराबर फर्क होना— ज़रा-सा भी भेद होना। सूक्ष्मतम अंतर होना।
- बाल-बाल बचना— कोई विपत्ति आने या हानि पहुँचने में बहुत थोड़ी कमी रह जाना।





काल

नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए—

- इस झोंपड़ी में से एक टोकरी भर मिट्टी लेकर उसी का चूल्हा बनाकर रोटी पकाऊँगी।
- इस झोंपड़ी में से एक टोकरी भर मिट्टी लेकर उसी का चूल्हा बनाकर रोटी पकाई।
- इस झोंपड़ी में से एक टोकरी भर मिट्टी लेकर उसी का चूल्हा बनाकर रोटी पका रही हूँ।

यहाँ रेखांकित शब्दों से पता चल रहा है कि कार्य होने का समय या काल क्या है। क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि कोई कार्य कब हुआ, हो रहा है या होने वाला है, उसे काल कहते हैं।

काल के तीन भेद होते हैं—

1. भूतकाल — यह बताता है कि कार्य पहले ही हो चुका है।
2. वर्तमान काल — यह बताता है कि कार्य अभी हो रहा है या सामान्य रूप से होता रहता है।
3. भविष्य काल — यह बताता है कि कार्य आने वाले समय या भविष्य में होगा।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

नीचे दिए गए वाक्यों को वर्तमान और भविष्य काल में बदलिए—

(क) वह गिड़गिड़ाकर **बोली**।

(ख) श्रीमान् ने आज्ञा **दे दी**।

(ग) उसकी आँखों से आँसू की धारा बहने **लगी**।

(घ) ज़मींदार साहब को अपने महल का अहाता उस झोंपड़ी तक बढ़ाने की इच्छा **हुई**।

(ङ) उन्होंने वृद्धा से क्षमा माँगी और उसकी झोंपड़ी वापस **दे दी**।





वचन की पहचान



"उनके मन में कुछ दया आ गई।"

"उनकी आँखें खुल गईं।"

ऊपर दिए गए रेखांकित शब्दों में क्या अंतर है और क्यों? आपस में चर्चा करके पता लगाइए।

आपने ध्यान दिया होगा कि शब्द में एक अनुस्वार-भर के अंतर से उसके अर्थ में अंतर आ जाता है।

नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में उपयुक्त शब्द भरिए—

(क) वृद्धा झोंपड़ी के भीतर _____। (गई/गईं)

(ख) वृद्धा गिड़गिड़ाकर _____। (बोली/बोलीं)

(ग) पोती ने खाना-पीना छोड़ दिया _____। (है/हैं)

(घ) उसकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगी _____। (थी/थीं)

(ङ) उसने अपनी टोकरी मिट्टी से भर ली और बाहर ले _____। (आई/आईं)

(च) झोंपड़ी में बसी पुरानी यादें वृद्धा को रुला _____। (गई/गईं)

(छ) पाठक देख सकते हैं कि कैसे एक छोटी-सी टोकरी ने बड़े बदलाव ला दिए _____। (है/हैं)



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



कहानी की रचना

"यह सुनकर वृद्धा ने कहा, "महाराज, नाराज न हों तो..."

इस पंक्ति में लेखक ने जानबूझकर वृद्धा की कही हुई बात को अधूरा छोड़ दिया है। बात को अधूरा छोड़ने के लिए '...' का उपयोग किया गया है। इस प्रकार के वाक्यों और प्रयोगों से कहानी का प्रभाव और बढ़ जाता है। अनेक बार कहानी में नाटकीयता लाने के लिए भी इस प्रकार के प्रयोग किए जाते हैं।

(क) आपको इस कहानी में ऐसी अनेक विशेषताएँ दिखाई देंगी। उन्हें अपने समूह के साथ मिलकर ढूँढ़िए और उनकी सूची बनाइए।

(ख) इस कहानी की कुछ विशेषताओं को नीचे दिया गया है। इनके उदाहरण कहानी से चुनकर लिखिए—

कहानी की विशेषताएँ	कहानी से उदाहरण
1. **प्रश्नोत्तरी शैली**— कहानी में ऐसे प्रश्न हैं जो पाठक को सोचने पर विवश कर देते हैं।	
2. **वर्णनात्मकता**— लेखक ने जगहों और भावनाओं का ऐसा चित्र खींचा है कि पाठक दृश्य को देख सकता है।	
3. **भावात्मकता**— कहानी में करुणा, पछतावा और प्रेम जैसे गहरे भाव दिखते हैं।	
4. **संवादात्मकता**— पात्रों के संवादों से कहानी आगे बढ़ती है और प्रभावी बनती है।	
5. **नाटकीयता**— कुछ दृश्य इतने प्रभावशाली हैं कि वे नाटक जैसे लगते हैं।	
6. **चरित्र चित्रण**— पात्रों के गुण, स्वभाव और मन की स्थिति स्पष्ट रूप से दिखती है।	

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



शब्दकोश का उपयोग



आप जानते ही हैं कि हम शब्दकोश का प्रयोग करके शब्दों के विषय में अनेक प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। नीचे कुछ शब्दों के अनेक अर्थ शब्दकोश से चुनकर दिए गए हैं। इन शब्दों के जो अर्थ इस कहानी के अनुसार सबसे उपयुक्त हैं, उन पर घेरा बनाइए—

वाक्य	रेखांकित शब्द का अर्थ
1. श्रीमान् के सब प्रयत्न निष्फल हुए	धनी, शोभायुक्त, शोभावान्, संपत्तिशाली, संपन्न, पुरुषों के नाम के पूर्व आदर सूचनार्थ लगाया जाने वाला शब्द।
2. पतोहू भी एक पाँच बरस की कन्या को छोड़कर चल बसी थी।	अविवाहित लड़की, एक राशि का नाम, लड़की, बड़ी इलायची।
3. ज़मींदार साहब को अपने महल का अहाता उस झोंपड़ी तक बढ़ाने की इच्छा हुई।	राजा या रईस आदि के रहने का बहुत बड़ा और बढ़िया मकान, प्रासाद, अंतःपुर, पत्नी, उतरने की जगह।
4. वह तो कई ज़माने से वहीं बसी थी।	काल, बहुत अधिक समय, सौभाग्य का समय, संसार, जगत, राज्यकाल, अवधि, युग, कार्यकाल, विलंब, देर, अतिकाल।
5. यही उसकी पोती इस वृद्धाकाल में एकमात्र आधार थी।	सहारा, आलंबन, पात्र (नाटक), नींव, बाँध, नहर, संबंध, बरतन, परिस्थितियाँ, अधिष्ठान, आश्रय देनेवाला, पालन करनेवाला।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED







भावों की पहचान

"कृतकर्म का पश्चाताप कर उन्होंने वृद्धा से क्षमा माँगी..."

कहानी की इस पंक्ति से कौन-कौन से भाव प्रकट हो रहे हैं? सही पहचाना, इस पंक्ति से पश्चाताप और क्षमा के भाव प्रकट हो रहे हैं। अब नीचे दी गई पंक्तियों में प्रकट हो रहे भावों से उनका मिलान कीजिए—

क्रम	पंक्तियाँ	भाववाचक संज्ञा
1.	वह लज्जित होकर कहने लगे— 'नहीं, यह टोकरी हमसे न उठाई जाएगी।'	ममता / स्नेह
2.	वृद्धा के उपर्युक्त वचन सुनते ही उनकी आँखें खुल गईं।	दुख / पीड़ा
3.	उनके मन में कुछ दया आ गई।	विनम्रता / विनय
4.	इससे भरोसा है कि वह रोटी खाने लगेगी।	अहंकार / घमंड
5.	महाराज क्षमा करें तो एक विनती है।	बोध / आत्मज्ञान
6.	अब यही उसकी पोती इस वृद्धाकाल में एकमात्र आधार थी।	आस्था / विश्वास
7.	ज़मींदार साहब धन-मद से गर्वित हो अपना कर्तव्य भूल गए थे।	जुड़ाव / मोह
8.	उस झोंपड़ी में उसका मन ऐसा कुछ लग गया था कि बिना मरे वहाँ से वह निकलना ही नहीं चाहती थी।	करुणा / दया
9.	जब उसे अपनी पूर्वस्थिति की याद आ जाती तो मारे दुख के फूट-फूट कर रोने लगती थी।	क्रूरता / अन्याय
10.	बाल की खाल निकालने वाले वकीलों की थैली गरम कर उन्होंने अदालत से झोंपड़ी पर अपना कब्जा कर लिया।	लज्जा / पछतावा

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



वाक्य विस्तार



'वृद्धा पहुँची।'

यह केवल दो शब्दों से बना एक वाक्य है लेकिन हम इस वाक्य को बड़ा भी बना सकते हैं—

'वह वृद्धा हाथ में एक टोकरी लेकर वहाँ पहुँची।'

अब बात कुछ अच्छी तरह समझ में आ रही है। किंतु इसी वाक्य को हम और विस्तार भी दे सकते हैं, जैसे—

'थकी हुई आँखों और काँपते हाथों में टोकरी लिए वृद्धा धीरे-धीरे दरवाजे पर पहुँची।'

अब यह वाक्य अनेक अर्थ और भाव व्यक्त कर रहा है। अब इसी प्रकार नीचे दिए गए वाक्यों का कहानी को ध्यान में रखते हुए विस्तार कीजिए। प्रत्येक वाक्य में लगभग 15–20 शब्द हो सकते हैं।

1. एक झोंपड़ी थी।
2. श्रीमान् टहल रहे थे।
3. वह खाने लगेगी।
4. वृद्धा भीतर गई।
5. आगे बढ़े।





संवाद फोन पर

(क) कल्पना कीजिए कि यह कहानी आज के समय की है। ज़मींदार वृद्धा की पोती को समझाना चाहता है कि वह जिद छोड़ दे और भोजन कर ले। उसने पोती को फोन किया है। अपनी कल्पना से दोनों की बातचीत लिखिए।

(ख) कल्पना कीजिए कि ज़मींदार और उसका कोई मित्र वृद्धा की झोंपड़ी हथियाने के बारे में मोबाइल पर लिखित संदेशों द्वारा चर्चा कर रहे हैं। मित्र उसे समझा रहा है कि वह झोंपड़ी न हड़पे। उनकी इस लिखित चर्चा को अपनी कल्पना से भाव मुद्रा (इमोजी) के साथ लिखिए।

उदाहरण—

- मित्र — इस विचार को छोड़ दो, तुम्हें आखिर किस बात की कमी है? 😐
- ज़मींदार — 😡 मुझे तुमसे उपदेश नहीं सुनना है।



पोती की भावनाएँ

"मेरी पोती ने खाना-पीना छोड़ दिया है।"

(क) कहानी में वृद्धा की पोती एक महत्वपूर्ण पात्र है, भले ही उसका उल्लेख केवल एक-दो पंक्तियों में ही हुआ है। कल्पना कीजिए कि आप ही वह पोती हैं। आपको अपने घर से बहुत प्यार है। अपने घर को बचाने के लिए जिलाधिकारी को एक पत्र लिखिए।

(ख) मान लीजिए कि वृद्धा की पोती दैनंदिनी (डायरी) लिखा करती थी। कहानी की घटनाओं के आधार पर कल्पना कीजिए कि उसने अपनी डायरी में क्या लिखा होगा? स्वयं को पोती के स्थान पर रखते हुए वह दैनंदिनी लिखिए। उदाहरण के लिए—



© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

मेरी दैनंदिनी

2 मई — आज दादी घर पर आईं तो बहुत परेशान थीं। मैंने बहुत पूछा। उन्होंने बताया...

पाठ से आगे



आपकी बात

(क) कहानी में वृद्धा की पोती अपने घर से बहुत प्यार करती थी। आपके घर से अपने लगाव का अनुभव बताइए।

(ख) क्या कभी आपको किसी स्थान, वस्तु या व्यक्ति से इतना लगाव हुआ है कि उसे छोड़ना मुश्किल लगा हो? अपना अनुभव साझा कीजिए।

(ग) कहानी में ज़मींदार अपने किए पर पश्चाताप कर रहा है। क्या आपने कभी किसी को उनके किए पर पछताते हुए देखा है? उस घटना के बारे में बताइए। यह भी बताइए कि उस पश्चाताप का क्या परिणाम निकला?

(घ) क्या कभी ऐसा हुआ कि आपने कोई काम गुस्से या अहंकार में किया हो और बाद में पछताए हों? फिर आपने क्या किया? उस अनुभव से आपने क्या सीखा?



न्याय और समता

कहानी में आपने पढ़ा कि एक ज़मींदार ने लालच के कारण एक स्त्री का घर छीन लिया।

(क) क्या आपने किसी के साथ ऐसा अन्याय देखा, पढ़ा या सुना है? उसके बारे में बताइए।

(ख) ऐसी स्थितियों से निपटने के लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं? आपके आस-पास के लोग क्या-क्या कर सकते हैं?

(ग) "सच्ची शक्ति दया और न्याय में है।" इस कथन पर अपने विचार लिखिए।



घर-घर की कहानी

क्या आपको अपने घर की कहानी पता है? उसे कब बनाया गया? कैसे बनाया गया? उसे बनाने के लिए कैसे-कैसे प्रयास किए गए? चलिए, अपने घर की कहानी की खोजबीन करते हैं।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अपने घर के बड़े-बूढ़ों से उनके बचपन के घरों के बारे में साक्षात्कार लीजिए। आज आप जिस घर में रह रहे हैं, उसमें वे कब से रह रहे हैं? इसमें आने के पीछे क्या कहानी है, इसके बारे में भी बातचीत कीजिए। कक्षा में अपनी-अपनी कहानियाँ साझा कीजिए।



न्याय और करुणा से जुड़ी सहायता

"बाल की खाल निकालने वाले वकीलों की थैली गरम कर उन्होंने अदालत से झोंपड़ी पर कब्जा कर लिया।"

कहानी के इस प्रसंग को ध्यान में रखते हुए नागरिक शिकायत प्रक्रिया के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए। इसके बारे में अपने घर और आस-पास के लोगों को भी जागरूक कीजिए।

उदाहरण—

- सार्वजनिक शिकायत सुविधा— भारत सरकार की इस वेबसाइट पर सभी भारतीय, केंद्र या राज्य सरकारों के किसी भी विभाग से जुड़ी शिकायतें कर सकते हैं। इस वेबसाइट पर भारत की 22 भाषाओं में शिकायत दर्ज करवाई जा सकती है।

https://pgportal.gov.in

- जनसुनवाई— प्रत्येक राज्य और केंद्र शासित प्रदेश ने जनसुनवाई जैसी सुविधाओं को प्रारंभ किया हुआ है। इंटरनेट सुविधाओं का उपयोग भी किया जा सकता है।

https://jansunwai.up.nic.in/

- सामाजिक सुरक्षा कल्याण योजनाएँ— भारत सरकार की सामाजिक कल्याण की योजनाओं के बारे में जानने के लिए निम्नलिखित वेबसाइट का उपयोग किया जा सकता है—

https://eshram.gov.in/hi/social-security-welfare-schemes



आज की पहेली

नीचे दिए गए अक्षरों से सार्थक शब्द बनाइए—

1. ट् क र् ई ओ = टोकरी
2. य् आ द = _____
3. ई ल व क् = _____
4. झ् ओ ई प ड़् अं = _____
5. ज द् आ म् ई र अं = _____
6. त् आ इ औ क ल् = _____



© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



खोजबीन के लिए

हमारे देश में हजारों सालों से कहानियाँ सुनी-सुनाई जाती रही हैं। सैकड़ों साल पहले लिखी गई कहानियों की पुस्तकें आज भी उपलब्ध हैं। ऐसी ही एक अद्‌भुत पुस्तक *हितोपदेश* है जो आज भी विश्व में मनोरंजन और ज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य से पढ़ी-पढ़ाई जाती है। अपने पुस्तकालय से *हितोपदेश* की कहानियों की पुस्तक खोजकर पढ़िए और इसकी कोई एक कहानी कक्षा में सुनाइए।



@KIBS NOT TO BE REPUBLISHED

7 मत बाँधो

0871CH07



इन सपनों के पंख न काटो
इन सपनों की गति मत बाँधो!

सौरभ उड़ जाता है नभ में
फिर वह लौट कहाँ आता है?
बीज धूलि में गिर जाता जो
वह नभ में कब उड़ पाता है?

अग्नि सदा धरती पर जलती
धूम गगन में मँडराता है!
सपनों में दोनों ही गति हैं
उड़ कर आँखों में आता है!

इसका आरोहण मत रोको
इसका अवरोहण मत बाँधो!

मुक्त गगन में विचरण कर यह
तारों में फिर मिल जायेगा,
मेघों से रंग औ' किरणों से
दीप्ति लिए भू पर आयेगा।

स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प
भूमि को सिखलायेगा!
नभ तक जाने से मत रोको
धरती से इसको मत बाँधो!

इन सपनों के पंख न काटो
इन सपनों की गति मत बाँधो!

— महादेवी वर्मा

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

कवि से परिचय



(1907–1987)

हिंदी की सुप्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा का जन्म फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था। उन्होंने छोटी उम्र से ही कविता लिखना आरंभ कर दिया था। बच्चों के लिए उन्होंने 'बारहमासा', 'आज खरीदेंगे हम ज्वाला', 'अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी' जैसी अनेक कविताएँ लिखी हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने भावपूर्ण गद्य *मेरा परिवार*, *अतीत के चलचित्र*, *स्मृति की रेखाएँ* तथा *पथ के साथी* भी रचना की। उनके द्वारा लिखे गद्य के चरित्र पाठकों को याद रह जाने वाले होते हैं। *नीहार*, *रश्मि*, *नीरजा*, *सांध्य गीत* और *दीपशिखा* उनके चर्चित कविता-संग्रह हैं। उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न महादेवी वर्मा एक चित्रकार भी थीं।

पाठ से

आइए, अब हम इस कविता को थोड़ा और विस्तार से समझते हैं। नीचे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।



1. आप इनमें से कविता का मुख्य भाव किसे समझते हैं?
   - सपने मात्र कल्पनाएँ हैं
   - सपनों को भूल जाना चाहिए
   - सपनों की स्वतंत्रता बनी रहनी चाहिए
   - सपने देखना अच्छी बात है
2. 'मत बाँधो' कविता किसकी स्वतंत्रता की बात करती है?
   - प्रेम की
   - शिक्षा की
   - सपनों की
   - अधिकारों की

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

3. "इन सपनों के पंख न काटो" पंक्ति में सपनों के 'पंख' होने की कल्पना क्यों की गई है?

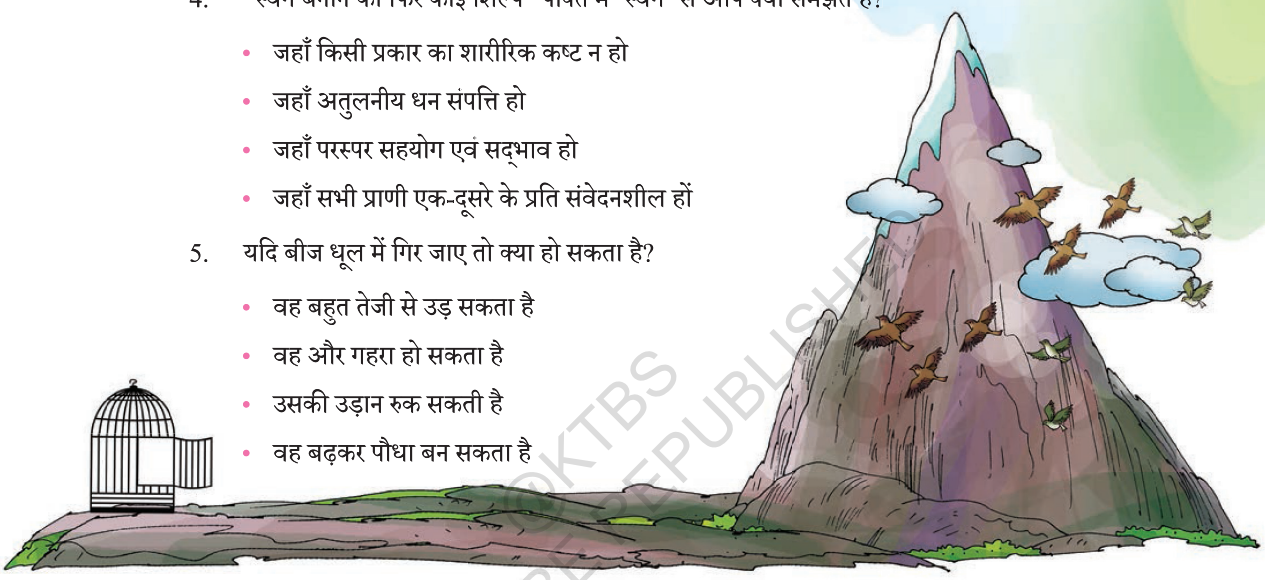
- सपने जीवन में कुछ नया करने की प्रेरणा देते हैं
- सपने सफलता की ऊँचाइयों तक ले जाते हैं
- सपने पंखों की तरह उड़ान भर भ्रमण करवाते हैं
- सपने पंखों की तरह कोमल और अनेक प्रकार के होते हैं

4. "स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प" पंक्ति में 'स्वर्ग' से आप क्या समझते हैं?

- जहाँ किसी प्रकार का शारीरिक कष्ट न हो
- जहाँ अतुलनीय धन संपत्ति हो
- जहाँ परस्पर सहयोग एवं सद्भाव हो
- जहाँ सभी प्राणी एक-दूसरे के प्रति संवेदनशील हों

5. यदि बीज धूल में गिर जाए तो क्या हो सकता है?

- वह बहुत तेजी से उड़ सकता है
- वह और गहरा हो सकता है
- उसकी उड़ान रुक सकती है
- वह बढ़कर पौधा बन सकता है



(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?



पंक्तियों पर चर्चा

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए।

(क) "सौरभ उड़ जाता है नभ में
फिर वह लौट कहाँ आता है?
बीज धूलि में गिर जाता जो
वह नभ में कब उड़ पाता है?"



© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED



(ख) "मुक्त गगन में विचरण कर यह
तारों में फिर मिल जायेगा,
मेघों से रंग औ' किरणों से
दीप्ति लिए भू पर आयेगा।"



मिलकर करें मिलान

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ स्तंभ 1 में दी गई हैं। उन पंक्तियों के भाव या संदर्भ स्तंभ 2 में दिए गए हैं। पंक्तियों को उनके सही भाव अथवा संदर्भ से मिलाइए।

क्रम	स्तंभ 1		स्तंभ 2
1.	इन सपनों के पंख न काटो इन सपनों की गति मत बाँधो!	1.	सपनों के उठने (आरोहण) और उनके व्यवहार में वापस आने (अवरोहण) में बाधा न डालें, क्योंकि स्वतंत्रता ही सपनों को साकार करने की कुंजी है।
2.	सपनों में दोनों ही गति हैं उड़कर आँखों में आता है!	2.	सपनों को ऊँचाइयों तक जाने से मत रोको। उन्हें धरती से बाँधकर मत रखो।
3.	इसका आरोहण मत रोको इसका अवरोहण मत बाँधो!	3.	किसी पक्षी के पंख काट दिए जाएँ तो वह उड़ नहीं सकता, वैसे ही अगर हम किसी के सपनों को बाधित करें तो उसकी कल्पनाशीलता और संभावनाएँ समाप्त हो जाएँगी।
4.	नभ तक जाने से मत रोको धरती से इसको मत बाँधो!	4.	रचनात्मक और स्वतंत्र विचार समाज को सुंदर, समृद्ध और शांतिपूर्ण बना सकता है।
5.	स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प भूमि को सिखलायेगा!	5.	सपनों में ऊपर उठने (आरोहण) और नीचे आने (अवरोहण) दोनों की विशेषता होती है। सपना विचार की तरह जन्म लेता है और फिर व्यवहार में पूरा होता है, तभी वह कल्पना से निकलकर सच्चाई बनता है।

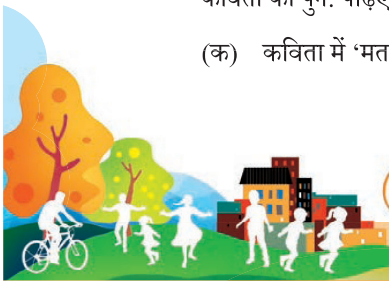
© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED



सोच-विचार के लिए

कविता को पुन: पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

(क) कविता में 'मत बाँधो', 'पंख न काटो' आदि संबोधन किसके लिए किए गए होंगे?



(ख) कविता में सपनों की गति न बाँधने की बात क्यों कही गई होगी?

(ग) कविता में सौरभ, बीज, धुआँ, अग्नि जैसे उदाहरणों के माध्यम से सपनों को इनसे भिन्न बताते हुए उसे विशेष बताया गया है। आपकी दृष्टि में इन सबसे अलग सपनों की और कौन-सी विशेषताएँ हो सकती हैं?

(घ) कविता में 'आरोहण' और 'अवरोहण' दोनों के महत्व की बात की गई है। उदाहरण देकर बताइए कि आपने 'आरोहण' और 'अवरोहण' को कब-कब सार्थक होते देखा?

(ङ) "सपनों में दोनों ही गति है / उड़कर आँखों में आता है!" क्या आप सहमत हैं कि सपने 'आँखों में लौटकर' वास्तविकता बन जाते हैं? अपने अनुभव या आस-पास के अनुभवों से कोई उदाहरण दीजिए।



शीर्षक

कविता का शीर्षक है 'मत बाँधो'। यदि आपको इस कविता को कोई अन्य नाम देना हो तो क्या नाम देंगे? आपने यह नाम क्यों सोचा? यह भी लिखिए।



अनुमान और कल्पना से

(क) मान लीजिए आप एक नया संसार बनाना चाहते हैं। उस संसार में आप क्या-क्या रखना चाहेंगे और क्या-क्या नहीं? अपने उत्तर का कारण भी बताइए।

(ख) कविता में शिल्प और कला के महत्व की बात की गई है। कलाएँ हमारे आस-पास की दुनिया को सुंदर बनाती हैं। आप अपने जीवन को सुंदर बनाने के लिए कौन-सी कला सीखना चाहेंगे? उससे आपका जीवन कैसे सुंदर बनेगा? अनुमान करके बताइए।

(ग) "सौरभ उड़ जाता है नभ में / फिर वह लौट कहाँ आता है?" यदि आपके पास अपने बीते हुए समय में लौटने का अवसर मिले तो आप बीते हुए समय में क्या-क्या परिवर्तन करना चाहेंगे?

(घ) "बीज धूलि में गिर जाता जो / वह नभ में कब उड़ पाता है?" यदि सपने बीज की तरह हों तो उन्हें उगने के लिए किन चीजों की आवश्यकता होगी? (संकेत— धूप अर्थात मेहनत, पानी अर्थात लगन आदि।)

(ङ) "स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प / भूमि को सिखलायेगा!" यदि अच्छे सपनों या विचारों से स्वर्ग बनाया जा सकता है तो बुरे सपनों अथवा विचारों से क्या होता होगा? बुरे सपनों या विचारों से कैसे बचा जा सकता है?

(च) "इन सपनों के पंख न काटो / इन सपनों की गति मत बाँधो!" कल्पना कीजिए कि हर किसी को सपने देखने और उन्हें पूरा करने की पूरी स्वतंत्रता मिल जाए, तब दुनिया कैसी होगी? आपके अनुसार उस दुनिया में कौन-सी बातें महत्वपूर्ण होंगी?

(छ) "इन सपनों के पंख न काटो / इन सपनों की गति मत बाँधो!" आपके विचार से यह सुझाव है? आदेश है? प्रार्थना है? या कुछ और है? यह बात किससे कही जा रही है?

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED



कविता की रचना



- "सौरभ उड़ जाता है नभ में..."
- "बीज धूलि में गिर जाता जो..."
- "अग्नि सदा धरती पर जलती..."

उपर्युक्त पंक्तियों पर ध्यान दीजिए। इन पंक्तियों को पढ़ते समय हमारी आँखों के सामने कुछ चित्र उभर आते हैं। कई बार कवि अपनी बात अथवा मुख्य भाव को समझाने या बताने के लिए उदाहरणों के माध्यम से शब्द-चित्रों की लड़ी-सी लगा देता है जिससे कविता में विशेष प्रभाव उत्पन्न हो जाता है। इस कविता में भी ऐसी अनेक विशेषताएँ छिपी हैं।

(क) अपने समूह के साथ मिलकर इन विशेषताओं की सूची बनाइए। अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

(ख) नीचे इस कविता की कुछ विशेषताएँ और वे पंक्तियाँ दी गई हैं जिनमें ये विशेषताएँ समाहित हैं। विशेषताओं का सही पंक्तियों से मिलान कीजिए।

क्रम	कविता की विशेषताएँ	कविता की पंक्तियाँ
1.	एक-दूसरे के विपरीत अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग किया गया है।	1. वह नभ में कब उड़ पाता है?
2.	एक ही शब्द का प्रयोग बार-बार किया गया है।	2. इसका आरोहण मत रोको इसका अवरोहण मत बाँधो!
3.	समानार्थी शब्दों का प्रयोग किया गया है।	3. स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प भूमि को सिखलायेगा!
4.	प्रश्न पूछा गया है।	4. इन सपनों के पंख न काटो
5.	संबोधन का प्रयोग किया गया है।	5. नभ तक जाने से मत रोको धरती से इसको मत बाँधो!
6.	सपने को मनुष्य की तरह चित्रित किया गया है।	6. दीप्ति लिए भू पर आयेगा। स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प भूमि को सिखलायेगा!

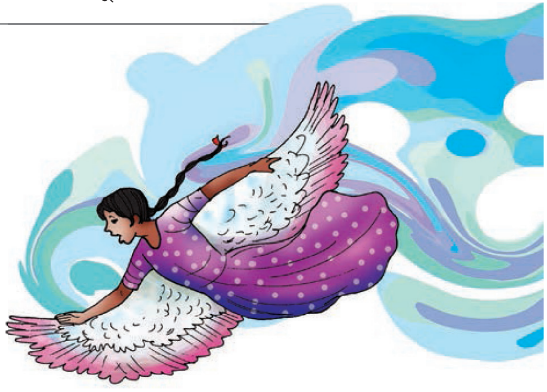
@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



शब्दों की बात

"इसका <u>आरोहण</u> मत रोको
इसका <u>अवरोहण</u> मत बाँधो!"

उपर्युक्त पंक्तियों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। 'आरोहण'



और 'अवरोहण' दोनों एक-दूसरे के विपरीतार्थक शब्द हैं। आरोहण का अर्थ है— नीचे से ऊपर की ओर जाना या चढ़ना और अवरोहण का अर्थ है— ऊपर से नीचे की ओर आना या उतरना।

(क) नीचे दिए रिक्त स्थान में 'आरोहण' और 'अवरोहण' का उपयुक्त प्रयोग करके वाक्यों को पूरा कीजिए।

- पर्वतारोहियों ने बीस दिन तक पर्वत पर _____ कर विजय प्राप्त की।
- नदियाँ विशाल पर्वतों से _____ करते हुए सागर में मिल जाती हैं।
- अंकगणित में बड़ी संख्या से छोटी संख्या की ओर लिखने की प्रक्रिया _____ क्रम कहलाती है।

इसी प्रकार से 'आरोहण' और 'अवरोहण' शब्दों के प्रयोग को देखते हुए आप भी कुछ सार्थक वाक्य बनाइए।



(ख) नीचे दी गई कविता की पंक्तियों के रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए—

"वह <u>नभ</u> में कब उड़ पाता है?"

"धूम <u>गगन</u> में मँडराता है।"

'नभ' और 'गगन' समान अर्थ वाले शब्द हैं। रेखांकित शब्दों के समानार्थी शब्दों का प्रयोग करते हुए कुछ नई पंक्तियों की रचना कीजिए और देखिए कि पंक्तियों में लय बनाए रखने के लिए और किन परिवर्तनों की आवश्यकता पड़ती है?

(ग) कविता में 'मत' शब्द के साथ 'बाँधो', 'काटो' क्रिया लगाई गई है। आप 'मत' के साथ कौन-कौन सी क्रियाएँ लगाना चाहेंगे? लिखिए। (संकेत— 'मत डरो')

(घ) आपकी भाषा में 'बाँधने' के लिए और कौन-कौन सी क्रियाएँ हैं? अपने समूह में चर्चा करके लिखिए और उनसे वाक्य बनाइए। (संकेत— जोड़ना)

(ङ) 'मत' शब्द को उलट कर लिखने से शब्द बनता है 'तम' जिसका अर्थ है 'अँधेरा'। कविता में से कुछ ऐसे और शब्द छाँटिए जिन्हें उलट कर लिखने से अर्थ देने वाले शब्द बनते हैं।



काल परिवर्तन

"सौरभ उड़ जाता है नभ में"

उपर्युक्त पंक्ति को ध्यान से देखिए। इस पंक्ति की क्रिया 'जाता है' से पता चलता है कि यह वर्तमान काल में लिखी गई है। यदि हम इसी पंक्ति को भूतकाल और भविष्य काल में लिखें तो यह निम्नलिखित प्रकार से लिखी जाएगी—

भूतकाल— सौरभ उड़ गया है नभ में

भविष्य काल— सौरभ उड़ जाएगा नभ में

©KTRS NOT TO BE REPUBLISHED

कविता में वर्तमान काल में लिखी गई ऐसी अनेक पंक्तियाँ आई हैं। उन पंक्तियों को कविता में से ढूँढ़कर भूतकाल और भविष्य काल में लिखिए।



शब्दकोश से

"स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प"

शब्दकोश के अनुसार 'शिल्प' शब्द के निम्नलिखित अर्थ हैं— 1. हाथ से कोई चीज बनाकर तैयार करने का काम— दस्तकारी, कारीगरी या हुनर, जैसे— बरतन बनाना, कपड़े सिलना, गहने गढ़ना आदि। 2. कला संबंधी व्यवसाय। 3. दक्षता, कौशल। 4. निर्माण, सर्जन, सृष्टि, रचना। 5. आकार, आवृत्ति। 6. अनुष्ठान, क्रिया, धार्मिक कृत्य।

अब शब्दकोश से 'शिल्प' शब्द से जुड़े निम्नलिखित शब्दों के अर्थ खोजकर लिखिए—

1. शिल्पकार, शिल्पी, शिल्पजीवी, शिल्पकारक, शिल्पिक या शिल्पकारी
2. शिल्पकला
3. शिल्पकौशल
4. शिल्पगृह या शिल्पगेह
5. शिल्पविद्या
6. शिल्पशाला या शिल्पालय



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

पाठ से आगे



आपकी बात

(क) कविता में गति को न बाँधने की बात कही गई है। आप 'बाँधने' का प्रयोग किन-किन स्थितियों या वस्तुओं के लिए करते हैं? बताइए। (संकेत— गाँठ बाँधना)

(ख) 'स्वर्ग' शब्द से आशय है 'सुखद स्थान'। अर्थात वह स्थान जहाँ सुख, शांति, समृद्धि और आनंद की अनुभूति हो। अपने घर, आस-पड़ोस और विद्यालय को सुखद स्थान बनाने के लिए आप क्या-क्या प्रयास करेंगे? सूची बनाइए और घर के सदस्यों के साथ साझा कीजिए।

(ग) कविता में सपनों की बात की गई है। आपका कौन-सा सपना ऐसा है जो यदि सच हो जाए तो वह दूसरों की सहायता कर सकता है? उसके विषय में बताइए।



चर्चा-परिचर्चा



"सपनों में दोनों ही गति है/उड़कर आँखों में आता है।" किसी एक के द्वारा देखा गया सपना बहुत से लोगों का सपना भी बन जाता है, जैसे— हमारे स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा भारत को स्वतंत्र कराने का सपना सभी भारतीयों का सपना बन गया। साथियों से चर्चा कीजिए कि आपके कौन-से ऐसे सपने हैं जिन्हें पूरा करने के लिए आप अन्य लोगों को भी जोड़ना चाहेंगे।



सृजन



(क) विराम चिह्न का फेरबदल—

रोको मत, जाने दो

रोको, मत जाने दो

लेखन में विराम चिह्नों का विशेष महत्व होता है। विराम चिह्नों के प्रयोग से वाक्य या पंक्ति का अर्थ स्पष्ट हो जाता है और परिवर्तित भी हो जाता है, जैसे— 'रोको मत, जाने दो' में रोको मत के बाद अल्पविराम चिह्न (,) का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है कि बिना रोके जाने दिया जाए। वहीं 'रोको, मत जाने दो' में रोको के बाद अल्पविराम (,) का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है कि जाने से रोका जाए। नीचे कुछ चित्र दिए गए हैं। आप किन चित्रों के लिए 'रोको मत, जाने दो' या 'रोको, मत जाने दो' का प्रयोग करेंगे? दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए और इन चित्रों को शीर्षक भी दीजिए।

© KTRS NOT TO BE REPUBLISHED







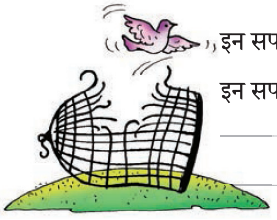






(ख) कविता आगे बढ़ाएँ

नीचे दी गई पंक्तियों को आगे बढ़ाते हुए अपनी एक कविता तैयार कीजिए।



इन सपनों के पंख न काटो

इन सपनों की गति मत बाँधो।



(ग) खोया-पाया

मान लीजिए आपका सपना कहीं खो गया है। उसके खो जाने की रिपोर्ट तैयार करें। आपको स्कूल प्रशासन को यह रिपोर्ट भेजनी है। इसके लिए स्कूल प्रशासन के नाम एक पत्र लिखिए।



वाद-विवाद

(क) कक्षा में पाँच-पाँच विद्यार्थियों के समूह बनाकर एक वाद-विवाद गतिविधि का आयोजन कीजिए। इसके लिए विषय है— "व्यक्ति को बाँध सकते हैं उसकी कल्पना और विचारों को नहीं।"

एक समूह विषय के विपक्ष में और दूसरा समूह विषय के पक्ष में अपना तर्क देगा। जैसे—

समूह 1— व्यक्ति की कल्पना और विचारों पर नियंत्रण आवश्यक है।

समूह 2— स्वतंत्र विचार और कल्पना प्रगति के लिए महत्वपूर्ण हैं।

(ख) विद्यार्थी वाद-विवाद के अनुभवों पर एक अनुच्छेद भी लिख सकते हैं।



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



देखना-सुनना-समझना...

(क) "धूम गगन में मँडराता है।"

सुगंध का अनुभव सूँघकर किया जाता है। धुएँ को देखा जा सकता है। वायु का अनुभव स्पर्श द्वारा किया जा सकता है और अनुभवों को बोलकर भी कहा या बताया जा सकता है जैसे कि कोई कमेंट्री कर रहा हो।

जो व्यक्ति देख पाने में सक्षम नहीं है, आप उन्हें निम्नलिखित स्थितियों का अनुभव कैसे करवा सकते हैं—

- वर्षा की बूँदों का
- धुएँ के उड़ने का
- खेल के रोमांच का



(ख) मूक अभिनय द्वारा कविता का भाव

विद्यार्थियों के बराबर-बराबर की संख्या में दो दल (टीम) बनाइए। दलों के नाम रखें— कल्पना और आकांक्षा।

'कल्पना' दल से एक प्रतिभागी आगे आए और मूक अभिनय (हाव-भाव या संकेत) के माध्यम से इस कविता की किसी भी पंक्ति का भाव प्रस्तुत करें। 'आकांक्षा' दल के प्रतिभागियों को पहचानकर बताना होगा कि अभिनय में किस पंक्ति की बात की जा रही है। पहचानने की समय सीमा भी निर्धारित की जाए। निर्धारित समय सीमा पर सही उत्तर बताने वाले दल को अंक भी दिए जा सकते हैं। इस तरह से खेल को आगे बढ़ाया जाए।

@NCERT NOT TO BE REPUBLISHED



आपदा प्रबंधन

"अग्नि सदा धरती पर जलती / धूम गगन में मँडराता है!"

आग, बाढ़, भूकंप जैसी आपदाएँ अचानक आ जाती हैं। सही जानकारी से आपदाओं की स्थिति में बचाव संभव हो जाता है।

(क) कक्षा में अपने शिक्षकों के साथ चर्चा कीजिए कि क्या-क्या करेंगे यदि—

- कहीं अचानक आग लग जाए
- आपके क्षेत्र में बाढ़ आ जाए
- भूकंप आ जाए

(ख) "मैं आपदा के समय क्या करूँगा या करूँगी?" — एक सूची या चित्र आधारित योजना बनाइए।



शिल्प

"स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प
भूमि को सिखलायेगा!"

हमारे देश में हजारों वर्षों से अनगिनत शिल्प प्रचलित हैं। उनमें से कुछ के बारे में आप पहले से जानते होंगे। इनके बारे में कक्षा में चर्चा कीजिए।

(क) अपने समूह के साथ मिलकर नीचे दिए गए शिल्प-कार्यों को उनके सही अर्थों या व्याख्या से मिलाइए—

शिल्प-कार्य	अर्थ या व्याख्या
1. काष्ठ शिल्प	1. काँच से झूमर, सजावटी वस्तुएँ और रंगीन खिड़कियाँ आदि बनाना
2. मृत्तिका शिल्प	2. कपड़ों पर कढ़ाई, बुनाई, छपाई, बंधेज आदि सजावटी कार्य
3. धातु शिल्प	3. कागज से खिलौने, सजावट, लिफाफे और पेपर मेशी बनाना
4. काँच शिल्प	4. लकड़ी से वस्तुएँ, खिलौने, मूर्तियाँ आदि बनाना
5. वस्त्र शिल्प	5. मिट्टी से बर्तन, दीये, मूर्तियाँ और सजावटी चीजें बनाना
6. कागज शिल्प	6. ताँबा, पीतल, लोहे जैसी धातुओं से दीपक, मूर्तियाँ, थालियाँ आदि बनाना
7. पत्थर शिल्प	7. पारंपरिक चित्रकलाओं, जैसे मधुबनी, गोंड, वरली आदि से कलाकृतियाँ बनाना
8. चमड़ा शिल्प	8. कपड़ों या सजावट की वस्तुओं में शीशे जोड़ना या जड़ाई करना
9. बाँस और बेंत शिल्प	9. लाख से चूड़ियाँ, खिलौने, डिब्बे और अन्य सजावटी वस्तुएँ बनाना
10. मोती एवं आभूषण शिल्प	10. लकड़ी, पत्थर या धातु पर बारीक खुदाई द्वारा डिजाइन बनाना
11. लाख शिल्प	11. बाँस और बेंत से टोकरियाँ, कुर्सियाँ, चटाई, पंखे आदि बनाना
12. शीशा शिल्प	12. चमड़े से जूते, बेल्ट, बैग और अन्य उपयोगी वस्तुएँ बनाना
13. चित्रकला शिल्प	13. संगमरमर या अन्य पत्थरों से मूर्तियाँ बनाना, मंदिरों की सजावट करना आदि
14. नक्काशी शिल्प	14. रंग-बिरंगे मोतियों से हार, कंगन, झुमके आदि गहने बनाना

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

(ख) अपने विद्यालय या परिवार के साथ हस्तशिल्प से जुड़े किसी स्थान या कार्यशाला का भ्रमण कीजिए और उस हस्तशिल्प के बारे में एक रिपोर्ट बनाइए।

अथवा

राष्ट्रीय हस्तशिल्प संग्रहालय की नीचे दी गई वेबसाइट में आपको कौन-सा हस्तशिल्प या कलाकृति सबसे अच्छी लगी और क्यों, उसके विषय में लिखिए।

https://nationalcraftsmuseum.nic.in/



झरोखे से

अभी आपने जो कविता पढ़ी उसे लिखा है महादेवी वर्मा ने। अब पढ़िए इन्हीं के द्वारा लिखी एक कहानी 'गिल्लू' का अंश—

मेरे पास बहुत से पशु-पक्षी हैं और उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है, परंतु उनमें से किसी को मेरे साथ मेरी थाली में खाने की हिम्मत हुई है, ऐसा मुझे स्मरण नहीं आता।

गिल्लू इनमें अपवाद था। मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार, बरामदा पार करके मेज पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना चाहता। बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया जहाँ बैठकर वह मेरी थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाता रहता। काजू उसका प्रिय खाद्य था और कई दिन काजू न मिलने पर वह अन्य खाने की चीजें या तो लेना बंद कर देता या झूले से नीचे फेंक देता था।





साझी समझ

'गिल्लू' कहानी को पुस्तकालय से ढूँढ़कर पूरी पढ़िए और अपने साथियों के साथ मिलकर चर्चा कीजिए।



खोजबीन के लिए

नीचे दी गई इंटरनेट कड़ियों के माध्यम से आप महादेवी वर्मा और उनकी रचनाओं के विषय में जान, समझ सकते हैं—

- महादेवी वर्मा | कवयित्री | जीवन और लेखन | हिंदी | भाग - 1

https://www.youtube.com/watch?v=stQL9KgVZHg

- महादेवी वर्मा | कवयित्री | जीवन और लेखन | हिंदी | भाग - 2

https://www.youtube.com/watch?v=_uqB5M9ZX6o

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

- कविता मंजरी, बारहमासा

https://www.youtube.com/watch?v=bjgVp0W-Muw

- गिल्लू – महादेवी वर्मा

https://www.youtube.com/watch?v=uxpOlfd05K8

- महादेवी वर्मा, भारतीय कवयित्री

https://www.youtube.com/watch?v=mWwpjf5YNT4



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

8 नए मेहमान

0871CH08

किराये के एक छोटे से मकान में अनेक असुविधाओं और गर्मी से परेशान घर के लोग रात में सोने की तैयारी कर रहे हैं। तभी अचानक दो ऐसे मेहमान आ जाते हैं जिन्हें घर का कोई व्यक्ति नहीं जानता है। 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' वाली स्थिति हो जाती है। संकोचवश उनकी खातिरदारी में जुटा एक आधुनिक शहरी मध्यवर्गीय परिवार किन परेशानियों से जूझता है, हम इसका जीवंत चित्रण उदयशंकर भट्ट के 'नए मेहमान' एकांकी में देख सकते हैं।

पात्र-परिचय

विश्वनाथ	—	गृहपति
नन्हेमल, बाबूलाल	—	अतिथि
प्रमोद, किरण	—	विश्वनाथ के बच्चे
आगंतुक	—	रेवती का भाई
रेवती	—	विश्वनाथ की पत्नी

स्थान

भारत का कोई बड़ा नगर

(गरमी की ऋतु, रात के आठ बजे का समय। कमरे के पूर्व की ओर दो दरवाजे। दक्षिण का द्वार बाहर आने-जाने के लिए। पश्चिम का द्वार भीतर खुलता है। उत्तर की ओर एक मेज है, जिस पर कुछ किताबें और अखबार रखे हैं। पास ही दो कुर्सियाँ, पश्चिम द्वार के पास एक पलंग बिछा है। मेज पर रखा हुआ पुराना पंखा चल रहा है, जिससे बहुत कम हवा आ रही है। कमरा बेहद गरम है। मकान एक साधारण गृहस्थ का है। पलंग के ऊपर चार-पाँच साल का एक बच्चा सो रहा है। पंखे की हवा केवल उस बच्चे को लग रही है। फिर भी वह पसीने से तर है। इसलिए वह कभी-कभी बेचैन हो उठता है, फिर सो जाता है।

कुरता-धोती पहने एक व्यक्ति प्रवेश करता है। पसीने से उसके कपड़े तर हैं। कुरता उतार कर वह खूँटी पर

@KVBS NOT TO BE REPUBLISHED

टाँग देता है और हाथ के पंखे से बच्चे को हवा करता है। उसका नाम विश्वनाथ है। उम्र 45 वर्ष, गठा हुआ शरीर, गेहुँआ रंग, मुख पर गंभीरता का चिह्न।)

विश्वनाथ ओफ, बड़ी गरमी है! (पंखा जोर-जोर से करने लगता है) इन बंद मकानों में रहना कितना भयंकर है! मकान है कि भट्टी!

(पश्चिम की ओर से एक स्त्री प्रवेश करती है)

रेवती (आँचल से मुँह का पसीना पोंछती हुई) पत्ता तक नहीं हिल रहा है। जैसे साँस बंद हो जाएगी। सिर फटा जा रहा है। (सिर दबाती है)

विश्वनाथ पानी पीते-पीते पेट फूला जा रहा है और प्यास है कि बुझने का नाम नहीं लेती। अभी चार गिलास पीकर आया हूँ, फिर भी होंठ सूख रहे हैं। एक गिलास पानी और पिला दो। ठण्डा तो क्या होगा!

रेवती गरम है। आँगन में घड़े में भी तो पानी ठंडा नहीं होता— हवा लगे तब तो ठंडा हो। जाने कब तक इस जेलखाने में सड़ना होगा।

विश्वनाथ मकान मिलता ही नहीं। आज दो साल से दिन-रात एक करके ढूँढ़ रहा हूँ। हाँ, पानी तो ले आओ, ज़रा गला ही तर कर लूँ।

रेवती बरफ ले आते। पर बरफ भी कोई कहाँ तक पिए।

विश्वनाथ बरफ! बरफ का पानी पीने से क्या फायदा? प्यास जैसी-की-तैसी, बल्कि दुगुनी लगती है। ओफ! लो, पंखा कर लो। बच्चे क्या ऊपर हैं?

रेवती रहने दो, तुम्हीं करो। छत इतनी छोटी है कि पूरी खाटें भी तो नहीं आतीं। एक खाट पर दो-दो, तीन-तीन बच्चे सोते हैं, तब भी पूरा नहीं पड़ता।

विश्वनाथ एक यह पड़ोसी हैं, निर्दयी, जो खाली छत पड़ी रहने पर भी बच्चों के लिए एक खाट नहीं बिछाने देंगे।

रेवती वे तो हमको मुसीबत में देखकर प्रसन्न होते हैं। उस दिन मैंने कहा तो लाला की औरत बोली 'क्या छत तुम्हारे लिए है? नकद पचास देते हैं, तब चार खाटों की जगह मिली है। न, बाबा, यह नहीं हो सकेगा। मैं खाट नहीं बिछाने दूँगी। सब हवा रुक जाएगी। उन्हें और किसी को सोता देखकर नींद नहीं आती।'

विश्वनाथ पर बच्चों के सोने में क्या हर्ज है? ज़रा आराम से सो सकेंगे। कहो तो मैं कहूँ?

रेवती क्या फायदा? अगर लाला मान भी लेगा तो वह नहीं मानेगी। वैसे भी मैं उसकी छत पर बच्चों का अकेला सोना पसन्द नहीं करूँगी।

विश्वनाथ फिर जाने दो। मैं नीचे आँगन में सो जाया करूँगा। कमरे में भला क्या सोया जाएगा? मैं कभी-कभी सोचता हूँ यदि कोई अतिथि आ जाए तो क्या होगा?

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

रेवती ईश्वर करे इन दिनों कोई मेहमान न आए। मैं तो वैसे ही गरमी के मारे मर रही हूँ। पिछले पंद्रह दिन से दर्द के मारे सिर फट रहा है। मैं ही जानती हूँ जैसे रोटी बनाती हूँ।

विश्वनाथ सारे शहर में जैसे आग बरस रही हो। यहाँ की गरमी से तो ईश्वर बचाए। इसीलिए यहाँ गर्मियों में सभी संपन्न लोग पहाड़ों पर चले जाते हैं।

रेवती चले जाते होंगे। गरीबों की तो मौत है।

(रेवती जाती है। बच्चा गरमी से घबरा उठता है। विश्वनाथ जोर-जोर से पंखा करता है।)

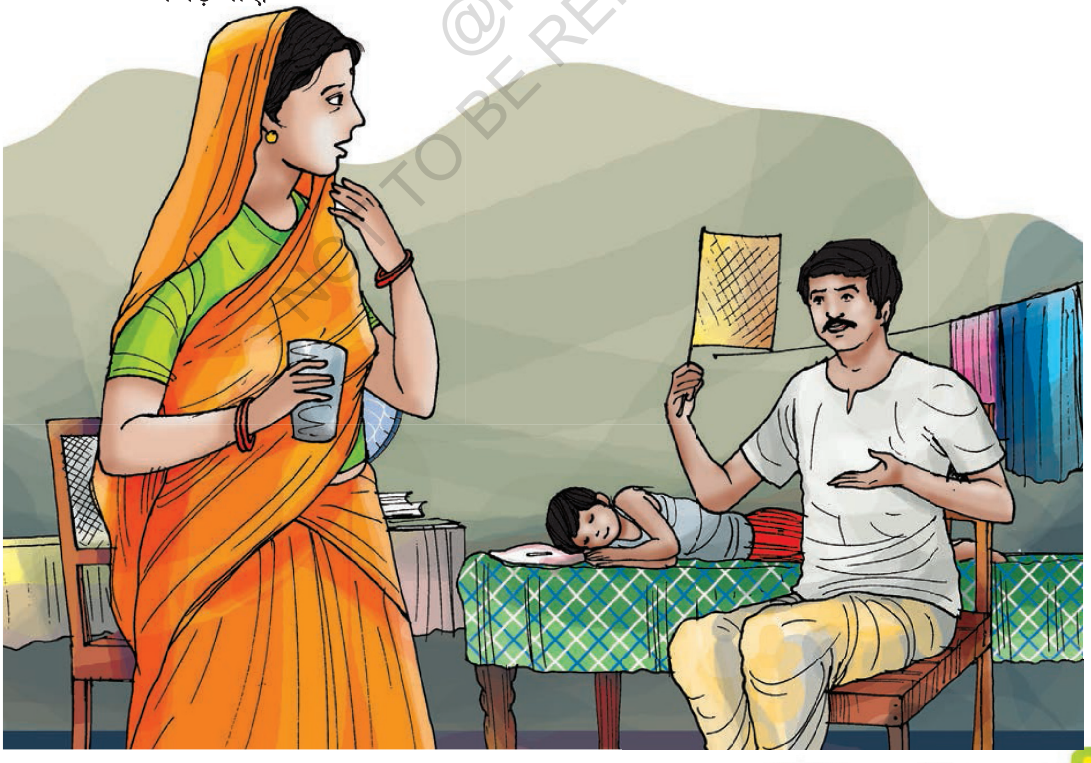
विश्वनाथ इन सुकुमार बालकों का क्या अपराध है? इन्होंने क्या बिगाड़ा है? तमाम शरीर मारे गरमी के उबल उठा है।

(रेवती पानी का गिलास लेकर आती है।)

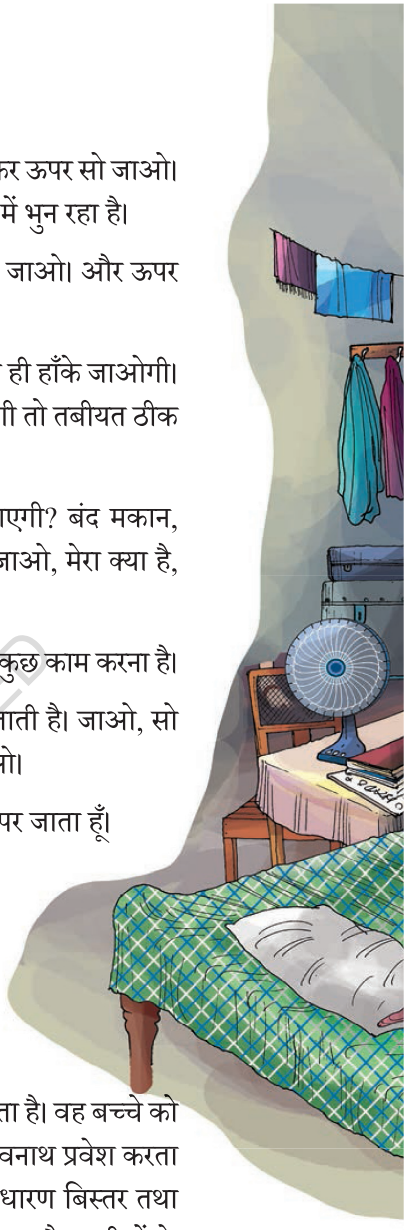
रेवती बड़े का तो अभी तक बुरा हाल है। अब भी कभी-कभी देह गरम हो जाती है।

विश्वनाथ (पानी पीकर) उसने क्या कम बीमारी भोगी है—पूरे तीन महीने तो पड़ा रहा। वह तो कहो मैंने उसे शिमला भेज दिया। नहीं तो न जाने...

रेवती भगवान ने रक्षा की। देखा नहीं, सामने वालों की लड़की को फिर से टाइफाइड हो गया और वह चल बसी। तुम कुछ दिनों की छुट्टी क्यों नहीं ले लेते। मुझे डर है, कहीं कोई बीमार न पड़ जाए।



@KIES NOT TO BE REPUBLISHED



विश्वनाथ छुट्टी कोई दे तब न। छुट्टी ले भी लूँ तो खर्च चाहिए। खैर, तुम आज जाकर ऊपर सो जाओ। मैं आँगन में खाट डालकर पड़ा रहूँगा। बच्चे को ले जाओ। यह गरमी में भुन रहा है।

रेवती यह नहीं हो सकता। मैं नीचे सो जाऊँगी। तुम ऊपर छत पर जाकर सो जाओ। और ऊपर भी क्या हवा है! चारों तरफ दीवारें तप रही हैं। तुम्हीं जाओ ऊपर।

विश्वनाथ यही तो तुम्हारी बुरी आदत है। किसी का कहना न मानोगी, बस अपनी ही हाँके जाओगी। पंद्रह दिन से सिर में दर्द हो रहा है। मैं कहता हूँ खुली हवा में सो जाओगी तो तबीयत ठीक हो जाएगी।

रेवती तुम तो व्यर्थ की जिद करते हो। भला यहाँ आँगन में तुम्हें नींद आएगी? बंद मकान, हवा का नाम नहीं। रात भर नींद न आएगी। सबेरे काम पर जाना है। जाओ, मेरा क्या है, पड़ी रहूँगी।

विश्वनाथ नहीं, यह नहीं हो सकता। आज तो तुम्हें ऊपर सोना पड़ेगा। वैसे भी मुझे कुछ काम करना है।

रेवती ऐसी गरमी में क्या काम करोगे? तुम्हें भी न जाने क्या धुन सवार हो जाती है। जाओ, सो जाओ। मैं आँगन में खाट पर इसे लेकर जैसे-तैसे रात काट लूँगी, जाओ।

विश्वनाथ अच्छा तुम जानो। मैं तो तुम्हारी भलाई के लिए कह रहा था। मैं ही ऊपर जाता हूँ।

(बाहर से कोई दरवाजा खटखटाता है।)

रेवती कौन होगा?

विश्वनाथ न जाने। देखता हूँ।

रेवती हे भगवान! कोई मुसीबत न आ जाए।

(बच्चे को पंखा करती है। बच्चा गरमी के मारे उठ बैठता है, पानी माँगता है। वह बच्चे को पानी पिलाती है, पंखा करती है। इसी समय दो व्यक्तियों के साथ विश्वनाथ प्रवेश करता है। रेवती बच्चे को लेकर आँगन में चली जाती है। आगंतुक एक साधारण बिस्तर तथा एक संदूक लेकर कमरे में प्रवेश करते हैं। विश्वनाथ भी पीछे-पीछे आता है। कमीजों के ऊपर काली बंडी, सिर पर सफेद पगड़ियाँ। बड़े की अवस्था पैंतीस और छोटे की चौबीस है। बड़े की मूँछे मुँह को घेरे हुए, माथे पर सलवट। छोटे की अधकटी मूँछें, लंबा मुख। दोनों मैली धोतियाँ पहने हैं। बड़े का नाम नन्हेमल और छोटे का बाबूलाल है। इस हबड़-तबड़ में दोनों बच्चे ऊपर से उतरकर आते हैं और दरवाजे के पास खड़े होकर आगंतुकों को देखते हैं।)

विश्वनाथ (बड़े लड़के से) प्रमोद, ज़रा कुर्सी इधर खिसका दो, (दूसरे अतिथि से) आप इधर खाट पर आ जाइए! ज़रा पंखा तेज कर देना, किरण।

(किरण पंखा तेज करती है, किंतु पंखा वैसे ही चलता है।)

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

नन्हेमल (पगड़ी के पल्ले से मुँह का पसीना पोंछकर उसी से हवा करता हुआ।) बड़ी गरमी है। क्या कहें, पंडित जी, पैदल चले आ रहे हैं, कपड़े तो ऐसे हो गए कि निचोड़ लो।

विश्वनाथ जी, आप लोग...

बाबूलाल चाचा, मेरे कपड़े निचोड़कर देख लो, एक लोटे से कम पसीना नहीं निकलेगा। धोती ऐसी चर्रा रही है, जैसे पुरानी हो। पिछले दिनों नकद नौ रुपये खर्च करके खरीदी थी।



नन्हेमल मोतीराम की दुकान से ली होगी। बड़ा ठग है। मैंने भी कुरतों के लिए छह गज मलमल मोल ली थी, सवा रुपया गज दी जबकि नत्थामल के यहाँ साढ़े नौ आने गज बिक रही थी। पंडित जी, गला सूखा जा रहा है। स्टेशन पर पानी भी नहीं मिला, मन करता है लेमन की पाँच-छह बोतलें पी जाऊँ।

बाबूलाल मुझे कोई पिलाकर देखे, दस से कम नहीं पीऊँगा, (बच्चों की ओर देखकर) क्या नाम है तुम्हारा भाई?

प्रमोद प्रमोद।

किरण किरण।

बाबूलाल ठंडा-ठंडा पानी पिलाओ दोस्त, प्राण सूखे जा रहे हैं।

विश्वनाथ देखो प्रमोद, कहीं से बरफ मिले तो ले आओ, आप लोग...

नन्हेमल अपना लोटा कहाँ रखा है? थैले में ही है न?

बाबूलाल बिस्तर में होगा चाचा, निकालूँ क्या? और तो और बिस्तर भी पसीने से भीग गया, चाचा मैं तो पहले नहाऊँगा, फिर जो होगा देखा जाएगा, हाँ नहीं तो! मुझे नहीं मालूम था यहाँ इतनी गरमी है।

नन्हेमल देखते जाओ। हाँ साहब।

विश्वनाथ क्षमा कीजिएगा आप कहाँ से पधारे हैं?

नन्हेमल अरे, आप नहीं जानते! वह लाला संपतराम हैं न गोटेवाले, वह मेरे चचेरे भाई हैं। क्या बताएँ साहब, उन बेचारों का कारोबार सब चौपट हो गया, हम लोगों के देखते-देखते वह लाखों के आदमी खाक में मिल गए। बाबू, यह लो मेरी बंडी संदूक में रख दो।

विश्वनाथ कौन संपतराम?

बाबूलाल अरे वही गोटेवाले। लाओ न, चाचा (संदूक खोलकर बंडी रखते हुए) माल-मसाला तो अंटी में है न?

नन्हेमल नहीं, जेब में है, बंडी की जेब में है। अब डर की क्या बात है! घर ही तो है।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

विश्वनाथ मैं संपतराम को नहीं जानता।

नन्हेमल संपतराम को जानने की... क्यों, वह तो आपसे मिले हैं। आपकी तो वह...

बाबूलाल हाँ, उन्होंने कई बार मुझसे कहा है। आपकी तो वह बहुत तारीफ करते हैं। पंडित जी, क्या मकान इतना ही बड़ा है?

नन्हेमल देख नहीं रहे, इसके पीछे एक कमरा दिखाई देता है। पंडित जी, इसके पीछे आँगन होगा और ऊपर छत होगी? शहर में तो ऐसे ही मकान होते हैं।

किरण (विश्वनाथ से) माँ पूछती है खाना...

नन्हेमल क्यों बाबूलाल? पंडित जी, कष्ट तो होगा, पर तुम जानो खाना तो...

बाबूलाल बस एक साग और पूरी।

नन्हेमल वैसे तो मैं पराँठे भी खा लेता हूँ।

बाबूलाल अरे खाने की भली चलाई, पेट ही तो भरना है। शहर में आए हैं तो किसी को तकलीफ थोड़े ही देंगे, देखिए पंडित जी, जिसमें आपको आराम हो, हम तो रोटी भी खा लेंगे। कल फिर देखी जाएगी।



नन्हेमल भूख कब तक नहीं लगेगी— सारा दिन तो गया।

बाबूलाल नहाने का प्रबंध तो होगा, पंडित जी?

(प्रमोद बरफ का पानी लाता है)

नन्हेमल हाँ भैया, ला तो ज़रा, मैं तो डेढ़ लोटा पानी पीऊँगा।

बाबूलाल उतना ही मैं।

(दोनों गट-गट पानी पीते हैं।)

किरण (विश्वनाथ से धीरे से) फिर खाना?

विश्वनाथ (इशारे से) ठहर जा ज़रा।

नन्हेमल (पानी पीकर) आह! अब जान में जान आई। सचमुच गरमी में पानी ही तो जान है।

बाबूलाल पानी भी खूब ठंडा है वाह भैया, खुश रहो।



नन्हेमल कितने सीधे लड़के हैं।

बाबूलाल शहर के हैं न!

विश्वनाथ क्षमा कीजिए, मैंने आपको...

दोनों अरे पंडित जी, आप कैसी बातें करते हैं? हम तो आपके पास के हैं।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

विश्वनाथ आप कहाँ से आए हैं?

नन्हेमल बिजनौर से।

विश्वनाथ (आश्चर्य से) बिजनौर से! बिजनौर में तो...। मैं बिजनौर गया हूँ, किंतु...

नन्हेमल मैं ज़रा नहाना चाहता हूँ।

बाबूलाल मैं भी स्नान करूँगा।

विश्वनाथ पानी तो नल में शायद ही हो, फिर भी देख लो। प्रमोद, इन्हें नीचे नल पर ले जाओ।

बाबूलाल तब तक खाना भी तैयार हो जाएगा।

(दोनों बाहर निकल जाते हैं, रेवती का प्रवेश)

रेवती ये लोग कौन हैं? जान-पहचान के तो मालूम नहीं पड़ते।

विश्वनाथ न जाने कौन हैं।

रेवती पूछ लो न?

विश्वनाथ क्या पूछ लूँ? दो-तीन बार पूछा, ठीक-ठीक उत्तर ही नहीं देते।

रेवती मेरा तो दर्द के मारे सिर फटा जा रहा है, इधर पिछली शिकायत फिर बढ़ती जा रही है। पहले सोते-सोते हाथ-पैर सुन्न हो जाते थे, अब बैठे-बैठे हो जाते हैं।

विश्वनाथ क्या बताऊँ, जीवन में तुम्हें कोई सुख न दे सका। नौकर भी नहीं टिकता है।

रेवती पानी जो तीन मंजिल पर चढ़ाना पड़ता है, इसीलिए भाग जाता है और गरमी क्या कम है! किसी को क्या जरूरत पड़ी है जो गरमी में भुने। यह तो हमारा ही भाग्य है कि चने की तरह भाड़ में भुनते रहते हैं।



© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

विश्वनाथ क्या किया जाए?

रेवती फिर क्या खाना बनाना ही होगा? पर ये हैं कौन?

विश्वनाथ खाना तो बनाना ही पड़ेगा। कोई भी हों, जब आए हैं तो खाना जरूर खाएँगे, थोड़ा-सा बना लो।

रेवती (तुनककर) खाना तो खिलाना ही होगा—तुम भी खूब हो! भला इस तरह कैसे काम चलेगा? दर्द के मारे सिर फटा जा रहा है, फिर खाना बनाना इनके लिए और इस समय? आखिर ये आए कहाँ से हैं?

विश्वनाथ कहते हैं बिजनौर से आए हैं।

रेवती (आश्चर्य से) बिजनौर! क्या बिजनौर में तुम्हारी जान-पहचान है? अपनी रिश्तेदारी का तो कोई आदमी वहाँ रहता नहीं है?

विश्वनाथ बहुत दिन हुए एक बार काम से बिजनौर गया था, पर तब से अब तो बीस साल हो गए हैं।

रेवती सोच लो, शायद वहाँ कोई साहित्यिक मित्र हो, उसी ने इन्हें भेजा हो।

विश्वनाथ ध्यान तो नहीं आता, फिर भी कदाचित कोई मुझे जानता हो और उसी ने भेजा हो, किसी संपतराम का नाम बता रहे थे, मैं जानता भी नहीं।

रेवती बड़ी मुश्किल है, मैं खाना नहीं बनाऊँगी, पहले आत्मा फिर परमात्मा, जब शरीर ही ठीक नहीं रहता तो फिर और क्या करूँ?

विश्वनाथ क्या कहेंगे कि रातभर भूखा मारा, बाजार से कुछ मँगा दो न!

रेवती बाजार से क्या मुफ्त में आ जाएगा? तीन-चार रुपये से कम में क्या इनका पेट भरेगा, पहले तुम पूछ लो, मैं बाद में खाना बनाऊँगी।

(बाबूलाल का प्रवेश, रेवती का दूसरी ओर से जाना)

बाबूलाल तबीयत अब शांत हुई है, फिर भी पसीने से नहा गया हूँ, न जाने पंडित जी, आप यहाँ कैसे रहते हैं! (पंखा करता है)

विश्वनाथ आठ-नौ लाख आदमी इस शहर में रहते हैं और उनमें से छह-सात लाख आदमी इसी तरह के मकानों में रहते हैं। (ऊपर छत पर शोर मचता है) क्या बात है? कैसा झगड़ा है, प्रमोद?

प्रमोद (आकर) उन्होंने दूसरी छत पर हाथ धो लिए, पानी फैल गया, इसीलिए वह पड़ोस की स्त्री चिल्ला रही है। मैंने कहा, सबेरे साफ कर देंगे, इन्हें मालूम नहीं था।

विश्वनाथ तुमने क्यों नहीं बताया कि हाथ दूसरी जगह धोओ।

प्रमोद मैं पानी पीने चला गया था। वहाँ उषा रोने लगी। उसे चुप कराया, पानी पिलाया और पंखा झलता रहा।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED



विश्वनाथ चलो कोई बात नहीं, उनसे कह दो कि सबेरे साफ करा देंगे।

(नेपथ्य में— "अरे बाबू, मेरी धोती दे देना। मैं भी नहा लूँ।")

बाबूलाल लाया चाचा। (जाता है)

(पड़ोसी का तेजी से प्रवेश)

पड़ोसी देखिए साहब, मेहमान आपके होंगे, मेरे नहीं। मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि मेरी छत पर इस तरह गंदा पानी फैलाया जाए।

विश्वनाथ वाकई गलती हो गई। कल सबेरे साफ करा दूँगा।

पड़ोसी आपसे रोज ही गलती होती है।

विश्वनाथ अनजान आदमी से गलती हो ही जाती है। उसे क्षमा कर देना चाहिए। कल से ऐसा नहीं होगा।

पड़ोसी होगा क्यों नहीं, रोज होगा। रोज होता है। अभी उसी दिन आपके एक और मेहमान ने पानी फैला दिया था। फिर वह हमारी खाट बिछाकर लेट गया था।

विश्वनाथ मैंने समझा तो दिया था। फिर तो वह आदमी खाट पर नहीं लेटा था।

पड़ोसी तो आपके यहाँ इतने मेहमान आते ही क्यों हैं? यदि मेहमान बुलाने हों तो बड़ा-सा मकान लो।

विश्वनाथ यह भी आपने खूब कहा कि इतने मेहमान क्यों आते हैं! अरे भाई मेहमानों को क्या मैं बुलाता हूँ? खैर, आज क्षमा करें, अब आगे ऐसा नहीं होगा।

पड़ोसी कहाँ तक कोई क्षमा करे। क्षमा, क्षमा! बस एक ही बात याद कर ली है— क्षमा!

(पड़ोसी चला जाता है। दोनों अतिथि आते हैं।)

दोनों क्या बात है?

विश्वनाथ कुछ नहीं, आप धोतियाँ छज्जे पर सुखा दें।

नन्हेमल सचमुच हमारी वजह से आपको बड़ा कष्ट हुआ। भैया, ज़रा-सा पानी और पिला दो। उफ्फ, बड़ी गरमी है। हाँ साहब, खाने में क्या देर-दार है? बात यह है कि नींद बड़े जोर से आ रही है।

विश्वनाथ देखिए, मैं आपसे एक-दो बात पूछना चाहता हूँ।

नन्हेमल हाँ, हाँ पूछिए, मालूम होता है, आपने हमें पहचाना नहीं है।

विश्वनाथ जी हाँ, बात यह है कि मैं बिजनौर गया तो अवश्य हूँ, पर बहुत दिन हो गए हैं।

©KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

नन्हेमल तो क्या हर्ज है— कभी-कभी ऐसा भी हो जाता है। हम तो आपको जानते हैं। कई बार आपको देखा भी है।

बाबूलाल लाला भानामल की लड़की की शादी में आप नजीबाबाद गए थे?

नन्हेमल अरे, दूर क्यों जाते हो। अभी पिछले साल आप मुरादाबाद गए थे?

विश्वनाथ हाँ पिछले साल मैं लखनऊ जाते हुए दो दिन के लिए जगदीशप्रसाद के पास मुरादाबाद ठहरा था।

नन्हेमल हाँ, सेठ जगदीशप्रसाद के यहाँ हमने आपको देखा था।

बाबूलाल उनकी आटे की मिल है, क्या कहने हैं उनके— बड़े आदमी हैं। हम उन्हीं के रिश्तेदार हैं।

विश्वनाथ पर उनका तो प्रेस है।

नन्हेमल प्रेस भी होगा। उनकी एक बड़ी मिल भी है। अब एक और गन्ने की मिल बिजनौर में खुल रही है।

बाबूलाल अगले महीने तक खुल जाएगी। हाँ भैया, पानी ले आए, लो चाचा, पहले तुम पी लो।

विश्वनाथ तो आप कोई चिट्ठी-विट्ठी लाए हैं?

दोनों (सकपकाकर) चिट्ठी, चिट्ठी तो नहीं लाए हैं।

नन्हेमल संपतराम ने कहा था कि स्टेशन से उतर कर सीधे रेलवे रोड चले जाना। वहाँ कृष्णा गली में वह रहते हैं।

विश्वनाथ पर कृष्णा गली तो यहाँ छह हैं। कौन-सी गली में बताया था?

नन्हेमल छह हैं। बहुत बड़ा शहर है साहब! हमें तो यह मालूम नहीं है, शायद बताया हो। याद ही नहीं रहा।

विश्वनाथ (खीझकर) जिसके यहाँ आपको जाना है, उसका नाम भी तो बताया होगा?

बाबूलाल क्या नाम था चाचा?

नन्हेमल नाम तो याद नहीं आता। ज़रा ठहरिए, सोच लूँ।

बाबूलाल अरे चाचा, कविराज या कवि बताया था। मैं उस समय नहीं था। सामान लेने घर गया था। तुम्हीं ने रेल में बताया था।

नन्हेमल हाँ, साहब, कविराज बताया था। आप तो बेकार शक में पड़े हैं! हम कोई चोर थोड़े ही हैं।

बाबूलाल चोर छिपे थोड़े ही रहते हैं। पंडित जी, क्या बताएँ, हमारे घर चलकर देख लें तो पता लगेगा कि हम भी...

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

विश्वनाथ लेकिन मैं कविराज तो नहीं हूँ?

दोनों (चिल्लाकर) तो कवि ही बताया होगा, साहब।

नन्हेमल हमें याद नहीं आ रहा। हमें तो जो पता दिया था उसी के सहारे आ गए। नीचे आवाज लगाई और आप मिल गए, ऊपर चढ़ आए। पहले हमने सोचा होटल या धर्मशाला में ठहर जाएँ। फिर सोचा घर के ही तो हैं। चलो, घर ही चलें।

विश्वनाथ जिनके यहाँ आपको जाना था, वह काम क्या करते हैं?

नन्हेमल काम? क्या काम बताया था बाबू?

बाबूलाल मेरे सामने तो कोई बात ही नहीं हुई। मैं तो सामान लेने चला गया था। आप तो, पंडित जी, शायद वैद्य हैं?

नन्हेमल हाँ, याद आया। बताया था वैद्य हैं।

विश्वनाथ पर मैं तो वैद्य नहीं हूँ।

प्रमोद पिछली गली में एक कविराज वैद्य रहते हैं।

विश्वनाथ हाँ, हाँ, ठीक, कहीं आप कविराज रामलाल वैद्य के यहाँ तो नहीं आए हैं?

दोनों (उछलकर) अरे हाँ, वही तो कविराज रामलाल।

विश्वनाथ शायद वह उधर के हैं भी।

नन्हेमल ठीक है, साहब, ठीक है। वही हैं। मैं भी सोच रहा था कि आप न संपतराम को जानते हैं, न जगदीशप्रसाद को— (प्रमोद से) कहाँ है उन कविराज का घर?



विश्वनाथ जाओ, इन्हें उनका मकान बता दो। मैं भीतर हो आऊँ।

दोनों चलो, जल्दी चलो भैया, अच्छा साहब, राम-राम।

विश्वनाथ (भीतर से ही) राम-राम!

रेवती अब जान में जान आई। हाय, सिर फटा जा रहा है।

(नीचे से आवाज आती है)

(नेपथ्य में— भले आदमी, न जाने कहाँ मकान लिया है— ढूँढ़ते-ढूँढ़ते आधी रात हो गई।)

रेवती फिर, फिर, (प्रसन्न होकर) अरे अरे भैया हैं! आओ, आओ, तुमने तो खबर भी न दी।

आगंतुक रेवती! (दोनों मिलते हैं। विश्वनाथ से) पिछले चार घंटे से बराबर मकान खोज रहा हूँ। क्या मेरा तार नहीं मिला?

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

विश्वनाथ नहीं तो, कब तार दिया था?

आगंतुक कल ही तो झाँसी से दिया था। सोचा था कि ठीक समय पर मिल जाएगा। ओह! बड़ी परेशानी हुई।

रेवती लो, कपड़े उतार डालो। पंखा करती हूँ। अरे प्रमोद, जा जल्दी से बरफ तो ला। मामा जी को ठंडा पानी पिला। और देख, नुक्कड़ पर हलवाई की दुकान खुली हो तो...

आगंतुक भाई, बहुत बड़ा शहर है। वह तो कहो, मैं भी ढूँढ़कर ही रहा, नहीं तो न जाने कहाँ होटल या धर्मशाला में रहना पड़ता। बड़ी गरमी है। मैं ज़रा बाथरूम जाना चाहता हूँ।

विश्वनाथ हाँ, हाँ, अवश्य। सामने चले जाइए।

आगंतुक एक बार तो जी में आया कि सामने होटल में ठहर जाऊँ। शायद रात को आप लोगों को कोई कष्ट हो।

रेवती ऐसा क्यों सोचते हो! कष्ट काहे का! यह तो हम लोगों का कर्तव्य था। अच्छा, तुम तैयार हो, मैं खाना बनाती हूँ।

आगंतुक भई, देखो, इस समय खाना-वाना रहने दो। मैं पानी पीकर सो जाऊँगा। वैसे मुझे भूख भी नहीं है।

रेवती (जाती हुई, लौटकर) कैसी बातें करते हो भैया! मैं अभी खाना बनाती हूँ।

आगंतुक इतनी गरमी में! रहने दो न।

विश्वनाथ तुम नहाने तो जाओ। (आगंतुक जाता है। रेवती से) कहो, अब?

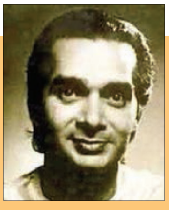
रेवती अब क्या, मैं खाना बनाऊँगी। भैया भूखे नहीं सो सकते।

(यवनिका)

— *उदयशंकर भट्ट*

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

लेखक से परिचय



(1898–1966)

अभी आपने जो एकांकी पढ़ी, उसके लेखक हैं— उदयशंकर भट्ट। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के इटावा में हुआ। परिवार में साहित्यिक वातावरण था इसलिए इनकी साहित्य में अधिक रुचि थी। इन्होंने रेडियो के लिए अनेक 'नाटक' लिखे। साथ ही नाटकों तथा फिल्मों में अभिनय भी किया है। इन्होंने कविता और उपन्यास भी लिखे हैं, लेकिन नाटक व एकांकी के क्षेत्र में इन्हें विशेष प्रसिद्धि मिली है। इनका *लोक-परलोक* उपन्यास और *पर्दे के पीछे* एकांकी संग्रह बहुत चर्चित रहे हैं।

पाठ से

आइए, अब हम इस एकांकी को थोड़ा और विस्तार से समझते हैं। नीचे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

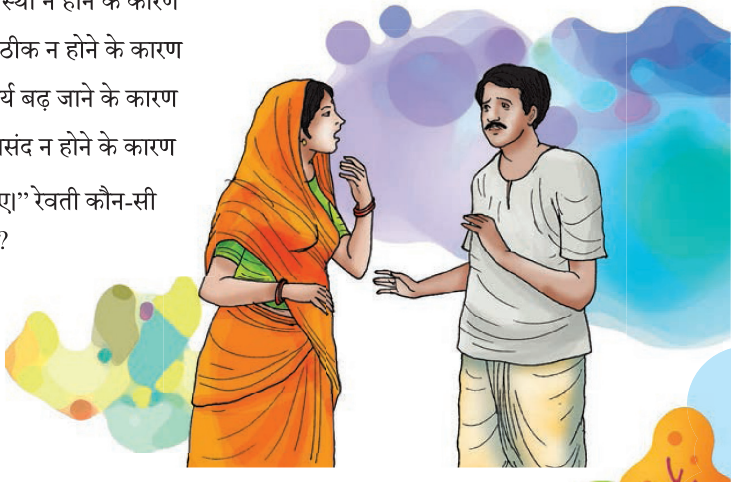


मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।



1. आगंतुकों ने विश्वनाथ के बच्चों को 'सीधे लड़के' किस संदर्भ में कहा?
   - अतिथियों की सेवा करने के कारण
   - किसी तरह का प्रश्न न करने के कारण
   - आज्ञाकारिता के भाव के कारण
   - गरमी को चुपचाप सहने के कारण
2. "एक ये पड़ोसी हैं, निर्दयी..." विश्वनाथ ने अपने पड़ोसी को निर्दयी क्यों कहा?
   - उन्हें कष्ट में देखकर प्रसन्न होते हैं
   - पड़ोसी किसी प्रकार का सहयोग नहीं करते हैं
   - लड़ने-झगड़ने के अवसर ढूँढ़ते हैं
   - अतिथियों का अपमान करते हैं
3. "ईश्वर करें इन दिनों कोई मेहमान न आए।" रेवती इस तरह की कामना क्यों कर रही है?
   - मेहमान के ठहरने की उचित व्यवस्था न होने के कारण
   - रेवती का स्वास्थ्य कुछ समय से ठीक न होने के कारण
   - अतिथियों के आने से घर का कार्य बढ़ जाने के कारण
   - उसे अतिथियों का आना-जाना पसंद न होने के कारण
4. "हे भगवान! कोई मुसीबत न आ जाए।" रेवती कौन-सी मुसीबत नहीं आने के लिए कहती है?
   - पानी की कमी होने की
   - पड़ोसियों के चिल्लाने की
   - मेहमानों के आने की
   - गरमी के कारण बीमारी की



© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

5. इस एकांकी के आधार पर बताएँ कि मुख्य रूप से कौन-सी बात किसी रचना को नाटक का रूप देती है?

- संवाद
- कथा
- वर्णन
- मंचन



(ख) हो सकता है कि आप सभी ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अब अपने सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?



पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपनी कक्षा में साझा कीजिए।



- "पानी पीते-पीते पेट फूला जा रहा है, और प्यास है कि बुझने का नाम नहीं लेती।"
- "सारे शहर में जैसे आग बरस रही हो।"
- "यह तो हमारा ही भाग्य है कि चने की तरह भाड़ में भुनते रहते हैं।"
- "आह, अब जान में जान आई। सचमुच गरमी में पानी ही तो जान है।"



मिलकर करें मिलान

स्तंभ 1 में कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं और स्तंभ 2 में उनसे मिलते-जुलते भाव दिए गए हैं। स्तंभ 1 की पंक्तियों को स्तंभ 2 की उनके सही भाव वाली पंक्तियों से रेखा खींचकर मिलाइए—

क्रम	स्तंभ 1	स्तंभ 2
1.	लाखों के आदमी खाक में मिल गए।	1. भोजन की व्यवस्था कब तक हो जाएगी
2.	धोती ऐसी चर्रा रही है, जैसे पुरानी हो।	2. पहले अपना ध्यान फिर दूसरा काम
3.	माल-मसाला तो अंटी में है न?	3. बहुत ही समृद्ध व्यक्ति थे पर अब उनके पास कुछ भी नहीं है
4.	खाने में क्या देर-दार है।	4. कपड़ा पसीने से भीगकर पुराने जैसा हो गया है
5.	पहले आत्मा फिर परमात्मा	5. धनराशि सुरक्षित तो है न!



सोच-विचार के लिए



एकांकी को पुनः पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED



(क) "शहर में तो ऐसे ही मकान होते हैं।" नन्हेमल का 'ऐसे ही मकान' से क्या आशय है?

(ख) पड़ोसी को विश्वनाथ से किस तरह की शिकायत है? आपके विचार से पड़ोसी का व्यवहार उचित है या अनुचित? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

(ग) एकांकी में विश्वनाथ नन्हेमल और बाबूलाल को नहीं जानता है, फिर भी उन्हें अपने घर में आने देता है। क्यों?

(घ) एकांकी के उन संवादों को ढूँढ़कर लिखिए जिनसे पता चलता है कि बाबूलाल और नन्हेमल विश्वनाथ के परिचित नहीं हैं?

(ङ) एकांकी के उन वाक्यों को ढूँढ़कर लिखिए जिनसे पता चलता है कि शहर में भीषण गरमी पड़ रही है।





अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए—

(क) एकांकी में विश्वनाथ अपनी पत्नी को अतिथियों के लिए भोजन की व्यवस्था करने के लिए कहता है। साथ ही रेवती की अस्वस्थता का विचार करके भोजन बाजार से मँगवाने का सुझाव भी देता है। लेकिन उसने स्वयं अतिथियों के लिए भोजन बनाने के विषय में क्यों नहीं सोचा?

(ख) एकांकी में विश्वनाथ का बेटा प्रमोद अतिथियों के पेयजल की व्यवस्था करता है और छोटी बहन का भी ध्यान रखता है। प्रमोद को इस तरह के उत्तरदायित्व क्यों दिए गए होंगे?

(ग) "कैसी बातें करते हो, भैया! मैं अभी खाना बनाती हूँ" भीषण गरमी और सिर में दर्द के बावजूद भी रेवती भोजन की व्यवस्था करने के लिए क्यों तैयार हो गई होगी?

(घ) एकांकी से गरमी की भीषणता दर्शाने वाली कुछ पंक्तियाँ दी जा रही हैं। अपनी कल्पना और अनुमान से बताइए कि सर्दी और वर्षा की भीषणता के लिए आप इनके स्थान पर क्या-क्या वाक्य प्रयोग करते हैं? अपने वाक्यों को दिए गए उचित स्थान पर लिखिए—

गरमी की भीषणता दर्शाने वाली पंक्तियाँ	सर्दी की भीषणता दर्शाने वाली पंक्तियाँ	वर्षा की भीषणता दर्शाने वाली पंक्तियाँ
1. यह गरमी में भुन रहा है।	यह सर्दी में जम गया।	यह वर्षा में भीग रहा है।
2. पर बरफ भी कोई कहाँ तक पिए।		
3. सारे शहर में जैसे आग बरस रही हो।		
4. प्यास है कि बुझने का नाम नहीं लेती।		
5. चारों तरफ दीवारें तप रही हैं।		

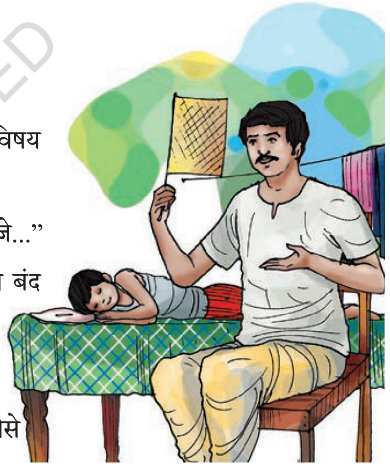
© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED



6. ठंडा-ठंडा पानी पिलाओ दोस्त, प्राण सूखे जा रहे हैं।		
7. सचमुच गरमी में पानी ही तो जान है।		
8. यह तो हमारा ही भाग्य है कि चने की तरह भाड़ में भुनते रहते हैं।		
9. फिर भी पसीने से नहा गया हूँ।		



एकांकी की रचना



इस एकांकी के आरंभ में पात्र-परिचय, स्थान, समय और विश्वनाथ और रेवती के घर के विषय में बताया गया है, जैसे कि—

- "गरमी की ऋतु, रात के आठ बजे का समय। कमरे के पूर्व की ओर दो दरवाजे..."
- विश्वनाथ— उफ्फ, बड़ी गरमी है (पंखा जोर-जोर से करने लगता है) इन बंद मकानों में रहना कितना भयंकर है। मकान है कि भट्टी!

(पश्चिम की ओर से एक स्त्री प्रवेश करती है)

- रेवती— (आँचल से मुँह का पसीना पोंछती हुई) पत्ता तक नहीं हिल रहा है। जैसे साँस बंद हो जाएगी। सिर फटा जा रहा है।

एकांकी की इन पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए। इन्हें पढ़कर स्पष्ट पता चल रहा है कि पहली पंक्ति समय और स्थान आदि के विषय में बता रही है। इसे रंगमंच-निर्देश कहते हैं। वहीं दूसरी पंक्तियों से स्पष्ट है कि ये दो लोगों द्वारा कही गई बातें हैं। इन्हें संवाद कहा जाता है। ये 'नए मेहमान' एकांकी का एक अंश है।

एकांकी एक प्रकार का नाटक होता है जिसमें केवल एक ही अंक या भाग होता है। इसमें किसी कहानी या घटना को संक्षेप में दर्शाया जाता है। आप इस एकांकी में ऐसी अनेक विशेषताएँ खोज सकते हैं। (जैसे— इस एकांकी में कुछ संकेत कोष्ठक में दिए गए हैं, पात्र-परिचय, अभिनय संकेत, वेशभूषा संबंधी निर्देश आदि)

(क) अपने समूह में मिलकर इस एकांकी की विशेषताओं की सूची बनाइए।

(ख) आगे कुछ वाक्य दिए गए हैं। एकांकी के बारे में जो वाक्य आपको सही लग रहे हैं, उनके सामने 'हाँ' लिखिए। जो वाक्य सही नहीं लग रहे हैं, उनके सामने 'नहीं' लिखिए।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

	वाक्य	हाँ/नहीं
1.	'नए मेहमान' एकांकी में पूरी कहानी एक ही स्थान, घर में घटित होती दिखाई गई है।	
2.	एकांकी में पात्रों की संख्या बहुत अधिक है।	
3.	एकांकी में एक कहानी छिपी है।	
4.	एकांकी और कहानी में कोई अंतर नहीं है।	
5.	एकांकी में कहानी की घटनाएँ अलग-अलग दिनों या महीनों में हो रही हैं।	
6.	एकांकी में कहानी मुख्य रूप से संवादों से आगे बढ़ती है।	
7.	एकांकी में पात्रों को अभिनय के लिए निर्देश दिए गए हैं।	



अभिनय की बारी

(क) क्या आपने कभी मंच पर कोई एकांकी या नाटक देखा है? टीवी पर फिल्में और धारावाहिक तो अवश्य देखे होंगे! अपने अनुभवों से बताइए कि यदि आपको अपने विद्यालय में 'नए मेहमान' एकांकी का मंचन करना हो तो आप क्या-क्या तैयारियाँ करेंगे। (उदाहरण के लिए— इस एकांकी में आप क्या-क्या जोड़ेंगे जिससे यह और अधिक रोचक बने, कौन-से पात्र जोड़ेंगे या पात्रों की वेशभूषा क्या रखेंगे?)

(ख) अब आपको अपने-अपने समूह में इस एकांकी को प्रस्तुत करने की तैयारी करनी है। इसके लिए आपको यह सोचना है कि कौन किस पात्र का अभिनय करेगा। आपके शिक्षक आपको तैयारी के बाद अभिनय के लिए निर्धारित समय देंगे (जैसे 10 मिनट या 15 मिनट)। आपको इतने ही समय में एकांकी प्रस्तुत करनी है। बारी-बारी से प्रत्येक समूह एकांकी प्रस्तुत करेगा।

सुझाव—

- आप एकांकी को जैसा दिया गया है, बिलकुल वैसा भी प्रस्तुत कर सकते हैं या इसमें थोड़ा-बहुत परिवर्तन भी कर सकते हैं।
- एकांकी के लिए आस-पास की वस्तुओं का ही उपयोग कर लेना है, जैसे— कुर्सी, मेज आदि।
- स्थान की कमी हो तो अभिनेता बच्चे अपने स्थान पर खड़े-खड़े भी संवाद बोल सकते हैं।
- आप चाहें तो अपने अभिनय को अपने शिक्षक की सहायता से रिकॉर्ड करके उसे अपने परिवार या संबंधियों के साथ साझा भी कर सकते हैं।



भाषा की बात

"सारे शहर में जैसे आग बरस रही हो।"

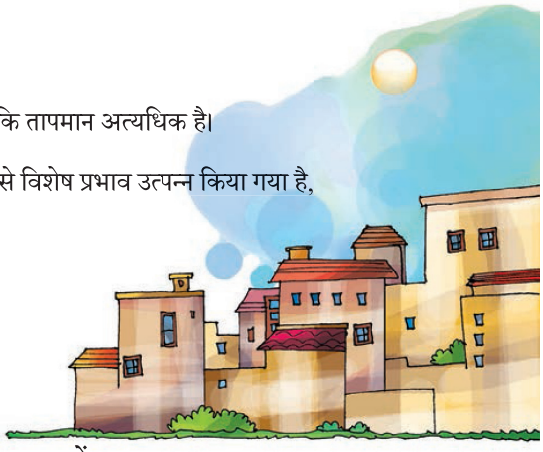
"चारों तरफ दीवारें तप रही हैं।"

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

"यह तो हमारा ही भाग्य है कि चने की तरह भाड़ में भुनते रहते हैं।"

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द गरमी की प्रचंडता को दर्शा रहे हैं कि तापमान अत्यधिक है।

एकांकी में इस प्रकार के और भी प्रयोग हुए हैं जहाँ शब्दों के माध्यम से विशेष प्रभाव उत्पन्न किया गया है, उन प्रयोगों को छाँटकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।



★ मुहावरे

"आज दो साल से दिन-रात एक करके ढूँढ़ रहा हूँ।"

"लाखों के आदमी खाक में मिल गए।"

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित वाक्यांश '**रात-दिन एक करना**' तथा '**खाक में मिलना**' मुहावरों का प्रायोगिक रूप है। ये वाक्य में एक विशेष प्रभाव उत्पन्न कर रहे हैं। एकांकी में आए अन्य मुहावरों की पहचान करके लिखिए और उनके अर्थ समझते हुए उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।



★ बात पर बल देना

- "वह तो कहो, मैं भी ढूँढ़कर ही रहा।"

उपर्युक्त वाक्य से रेखांकित शब्द 'ही' हटाकर पढ़िए—

"वह तो कहो, मैं भी ढूँढ़कर रहा"

(क) दो-दो के जोड़े में चर्चा कीजिए कि वाक्य में 'ही' के प्रयोग से किस बात को बल मिल रहा था और 'ही' हटा देने से क्या कमी आई?

(ख) नीचे लिखे वाक्यों में ऐसे स्थान पर 'ही' का प्रयोग कीजिए कि वे सामने लिखा अर्थ देने लगे—

1.	विश्वनाथ के अतिथि यहाँ रुकेंगे	और किसी के अतिथि नहीं।
2.	विश्वनाथ के अतिथि यहाँ रुकेंगे	यहाँ के अतिरिक्त और कहीं नहीं।
3.	विश्वनाथ के अतिथि यहाँ रुकेंगे	यहाँ रुकना निश्चित है।

- "तुम नहाने तो जाओ।"

उपर्युक्त वाक्य में 'तो' का स्थान बदलकर अर्थ में आए परिवर्तन पर ध्यान दें—

"तुम तो नहाने जाओ।"

"तुम नहाने जाओ तो।"

'ही' और 'तो' के ऐसे और प्रयोग करके वाक्य बनाइए।



@KVBS NOT TO BE REPUBLISHED

पाठ से आगे



आपकी बात

(क) "रेवती— ये लोग कौन हैं? जान-पहचान के तो मालूम नहीं पड़ते।

विश्वनाथ— क्या पूछ लूँ? दो-तीन बार पूछा, ठीक-ठीक उत्तर ही नहीं देते।"

उपर्युक्त संवाद से पता चलता है कि विश्वनाथ दुविधा की स्थिति में है। क्या आपके सामने कभी कोई ऐसी दुविधापूर्ण स्थिति आई है जब आपको यह समझने में समय लगा हो कि क्या सही है और क्या गलत? अपने अनुभव साझा कीजिए।

(ख) एकांकी से ऐसा लगता है कि नन्हेमल और बाबूलाल सगे संबंधी ही नहीं, अच्छे मित्र भी हैं। आपके अच्छे मित्र कौन-कौन हैं? वे आपको क्यों प्रिय हैं?

(ग) आप अपने किसी संबंधी या मित्र के घर जाने से पहले क्या-क्या तैयारी करते हैं?

(घ) विश्वनाथ के पड़ोसी उनका किसी प्रकार से भी सहयोग नहीं करते हैं। आप अपने पड़ोसियों का किस प्रकार से सहयोग करते हैं?

(ङ) नन्हेमल और बाबूलाल का व्यवहार सामान्य अतिथियों जैसा नहीं है। आपके अनुसार सामान्य अतिथियों का व्यवहार कैसा होना चाहिए?



सावधानी और सुरक्षा

(क) विश्वनाथ ने नन्हेमल और बाबूलाल से उनका परिचय नहीं पूछा और उन्हें घर के भीतर ले आए। यदि आप उनके स्थान पर होते तो क्या करते?

(ख) आपके माता-पिता या अभिभावक की अनुपस्थिति में यदि कोई अपरिचित व्यक्ति आए तो आप क्या-क्या सावधानियाँ बरतेंगे?



सृजन

(क) आपने यह एकांकी पढ़ी। इस एकांकी में एक कहानी कही गई है। उस कहानी को अपने शब्दों में लिखिए। (जैसे— एक दिन मेरे घर में मेहमान आ गए...)



गरमी का प्रकोप

"तमाम शरीर मारे गरमी के उबल उठा है।"

एकांकी में भीषण गरमी का वर्णन किया गया है। आप गरमी के प्रकोप से बचने के लिए क्या-क्या



NOT TO BE REPUBLISHED @KTRS

सावधानी बरतेंगे? पाँच-पाँच के समूह में चर्चा करें। मुख्य बिंदुओं को चार्ट पेपर पर लिखकर बुलेटिन बोर्ड पर लगाएँ और इन्हें व्यवहार में लाएँ।



तार से संदेश



"क्या मेरा तार नहीं मिला?"

रेवती के भाई ने अपने आने की सूचना तार द्वारा भेजी थी। 'तार' संदेश भेजने का एक माध्यम था। जिसके द्वारा शीघ्रता से किसी के पास संदेश भेजा जा सकता था, किंतु अब इसका प्रचलन नहीं है।

टेलीग्राफ

किसी भौतिक वस्तु के विनिमय के बिना ही संदेश को दूर तक संप्रेषित करना टेलीग्राफी कहलाता है। विद्युत धारा की सहायता से, पूर्व निर्धारित संकेतों द्वारा, संवाद एवं समाचारों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजनेवाला तथा प्राप्त करने वाला यंत्र तारयंत्र (टेलीग्राफ) कहलाता है। वर्तमान में यह प्रौद्योगिकी अप्रचलित हो गई है।

(क) तार भेजने के आधार पर अनुमान लगाएँ कि यह एकांकी लगभग कितने वर्ष पहले लिखी गई होगी?

(ख) आजकल संदेश भेजने के कौन-कौन से साधन सुलभ हैं?

(ग) आप किसी को संदेश भेजने के लिए किस माध्यम का सर्वाधिक उपयोग करते हैं?

(घ) अपने किसी प्रिय व्यक्ति को एक पत्र लिखकर भारतीय डाक द्वारा भेजिए।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



नाप, तौल और मुद्राएँ



"जबकि नत्थामल के यहाँ साढ़े नौ आने गज बिक रही थी।"

उपर्युक्त पंक्ति के रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। रेखांकित शब्द 'साढ़े नौ', 'आने', 'गज' में 'साढ़े नौ' भारतीय भाषा में अंतरराष्ट्रीय अंक (9.5) को दर्शा रहा है तो वहीं 'आने' शब्द भारतीय मुद्रा और 'गज' शब्द लंबाई नापने का मापक है।



(क) पता लगाइए कि एक रुपये में कितने आने होते हैं?

(ख) चार आने में कितने पैसे होते हैं?

(ग) आपके आस-पास गज शब्द का प्रयोग किस संदर्भ में किया जाता है? पता लगाइए और लिखिए।

(घ) बताइए कि एक गज में कितनी फीट होती हैं?



झरोखे से

कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जीवन सादगी भरा था, परंतु वे अपने आतिथ्य के लिए जाने जाते थे। उनके घर में कोई अतिथि आ जाए तो वे उसके सत्कार के लिए जी-जान से जुट जाते थे। महादेवी वर्मा की पुस्तक *पथ के साथी* से निराला के आतिथ्य भाव का एक छोटा-सा अंश पढ़िए—

..... ऐसे अवसरों की कमी नहीं जब वे अकस्मात पहुँच कर कहने लगे..... "मेरे इक्के पर कुछ लकड़ियाँ, थोड़ा घी आदि रखवा दो। अतिथि आए हैं, घर में सामान नहीं है।"

उनके अतिथि यहाँ भोजन करने आ जावें, सुनकर उनकी दृष्टि में बालकों जैसा विस्मय छलक आता है। जो अपना घर समझकर आए हैं, उनसे यह कैसे कहा जाए कि उन्हें भोजन के लिए दूसरे घर जाना होगा।

भोजन बनाने से लेकर जूठे बर्तन माँजने तक का काम वे अपने अतिथि देवता के लिए सहर्ष करते हैं। तैंतीस कोटि देवताओं के देश में इस वर्ग के देवताओं की संख्या कम नहीं, पर आधुनिक युग ने उनकी पूजा विधि में बहुत कुछ सुधार कर लिया है। अब अतिथि-पूजा के अवसर वैसे कम ही आते हैं और यदि आ भी पड़े तो देवता के और अभिषेक, शृंगार आदि संस्कार बेयरा, नौकर आदि ही संपन्न करा देते हैं। पुजारी गृहपति को तो भोग लगाने की मेज पर उपस्थित रहने भर का कर्तव्य सँभालना पड़ता है। कुछ देवता इस कर्तव्य से भी उसे मुक्ति दे देते हैं।

ऐसे युग में आतिथ्य की दृष्टि से निराला जी में वही पुरातन संस्कार है जो इस देश के ग्रामीण किसान में मिलता है।

उनके भाव की अतल गहराई और अबाध वेग भी आधुनिक सभ्यता के छिछले और बँधे भाव-व्यापार से भिन्न हैं।

©KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



साझी समझ

भारत में 'अतिथि देवो भव' की परंपरा रही है। आपके घर जब अतिथि आते हैं तो आप उनका अभिवादन कैसे करते हैं, अपनी भाषा में बताइए और अपने सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए कि अतिथियों को आप अपने राज्य, क्षेत्र का कौन-सा पारंपरिक व्यंजन खिलाना चाहते हैं।



खोजबीन के लिए

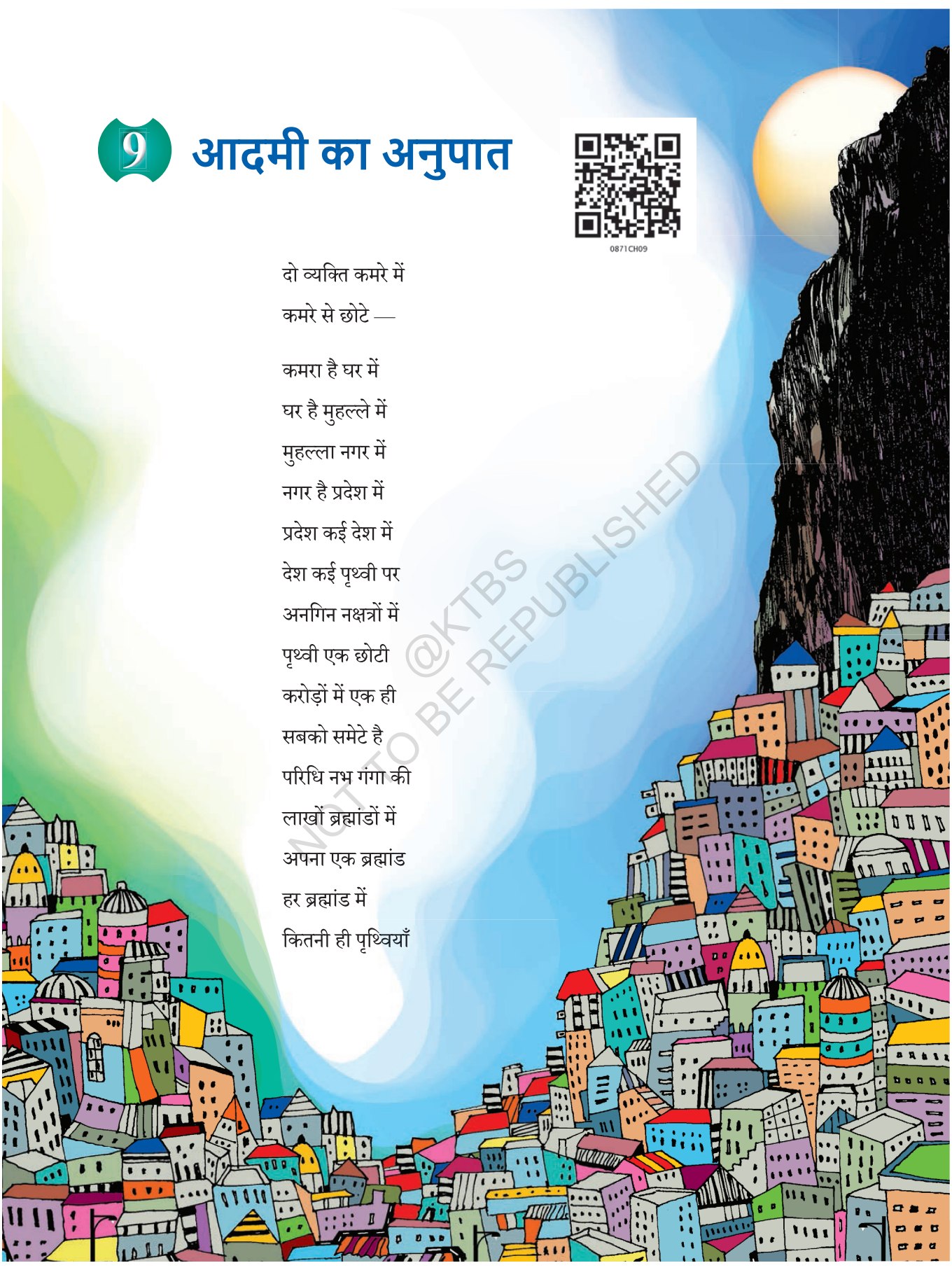
इस एकांकी में 'आने', 'गज' और 'तार' शब्द आए हैं। इनके विषय में विस्तार से जानकारी इकट्ठी कीजिए। इसके लिए आप अपने अभिभावक, अध्यापक, पुस्तकालय या इंटरनेट की सहायता भी ले सकते हैं।

9 आदमी का अनुपात

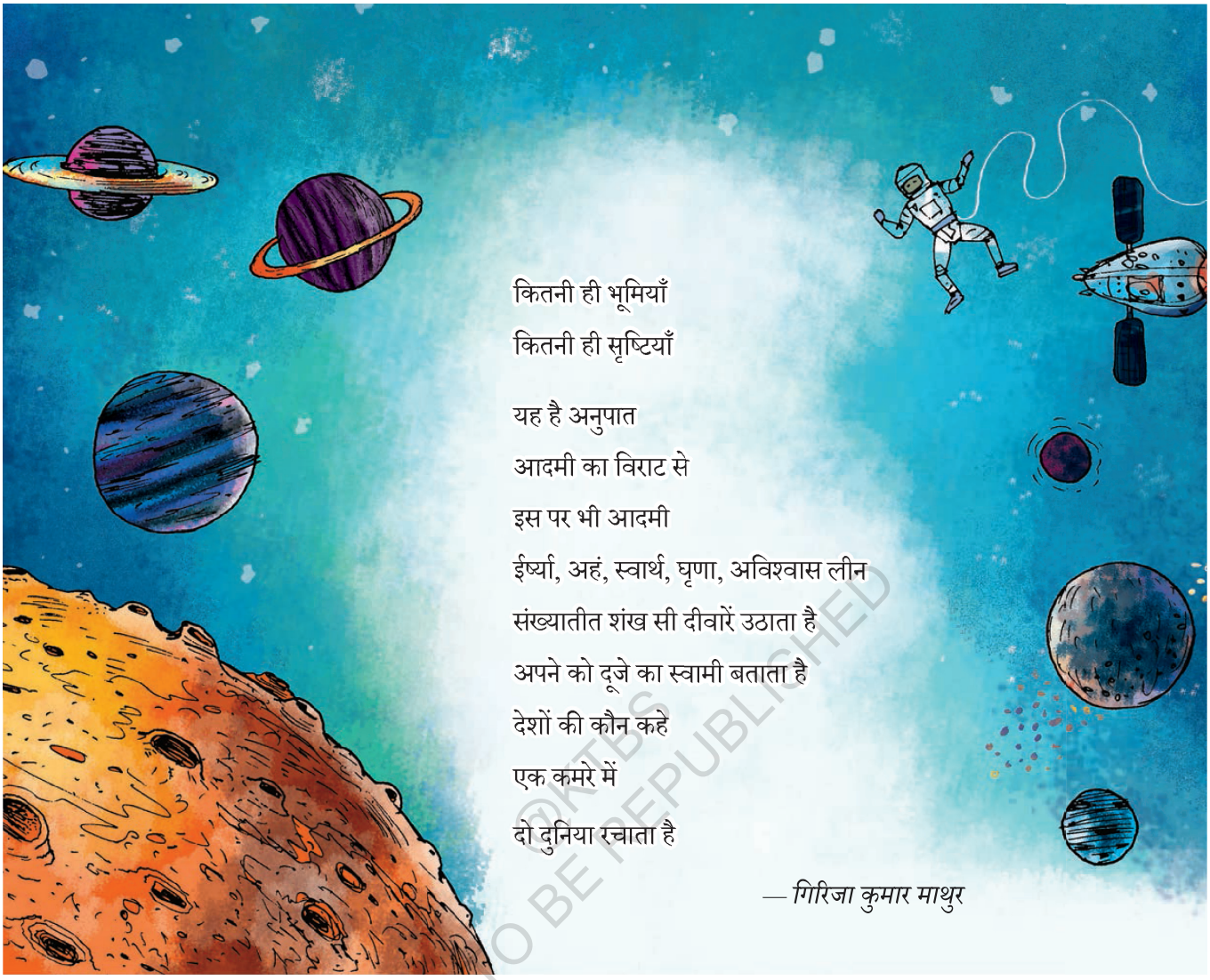
0871CH09

दो व्यक्ति कमरे में
कमरे से छोटे —

कमरा है घर में
घर है मुहल्ले में
मुहल्ला नगर में
नगर है प्रदेश में
प्रदेश कई देश में
देश कई पृथ्वी पर
अनगिन नक्षत्रों में
पृथ्वी एक छोटी
करोड़ों में एक ही
सबको समेटे है
परिधि नभ गंगा की
लाखों ब्रह्मांडों में
अपना एक ब्रह्मांड
हर ब्रह्मांड में
कितनी ही पृथ्वियाँ



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



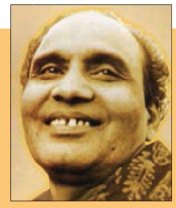
कितनी ही भूमियाँ
कितनी ही सृष्टियाँ

यह है अनुपात
आदमी का विराट से
इस पर भी आदमी
ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा, अविश्वास लीन
संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है
अपने को दूजे का स्वामी बताता है
देशों की कौन कहे
एक कमरे में
दो दुनिया रचाता है

— *गिरिजा कुमार माथुर*

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

कवि से परिचय



(1919–1994)

गिरिजा कुमार माथुर का जन्म मध्य प्रदेश के अशोक नगर जनपद में हुआ था। उनके पिता देवीचरण माथुर भी कविताएँ लिखते थे। गिरिजा कुमार माथुर आकाशवाणी में कई महत्वपूर्ण पदों पर रहे। कविताओं के अतिरिक्त उन्होंने कई नाटक, गीत, कहानी और निबंध भी लिखे। उनकी अनेक कृतियाँ प्रकाशित हैं, जिनमें *मंजीर, नाश और निर्माण, धूप के धान, शिलापंख चमकीले* और *मैं वक्त के हूँ सामने* प्रमुख हैं। उन्होंने प्रसिद्ध भावांतर गीत 'होंगे कामयाब' की भी रचना की थी।

पाठ से

आइए, अब हम इस कविता को थोड़ा और विस्तार से समझते हैं। नीचे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।



मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

(1) कविता के अनुसार ब्रह्मांड में मानव का स्थान कैसा है?

- पृथ्वी पर सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण
- ब्रह्मांड की तुलना में अत्यंत सूक्ष्म
- सूर्य, चंद्र आदि सभी नक्षत्रों से बड़ा
- समस्त प्रकृति पर शासन करने वाला

(2) कविता में मुख्य रूप से किन दो वस्तुओं के अनुपात को दिखाया गया है?

- पृथ्वी और सूर्य
- देश और नगर
- घर और कमरा
- मानव और ब्रह्मांड

(3) कविता के अनुसार मानव किन भावों और कार्यों में लिप्त रहता है?

- त्याग, ज्ञान और प्रेम में
- सेवा और परोपकार में
- ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा में
- उदारता, धर्म और न्याय में

(4) कविता के अनुसार मानव का सबसे बड़ा दोष क्या है?

- वह अपनी सीमाओं और दुर्बलताओं को नहीं समझता।
- वह दूसरों पर शासन स्थापित करना चाहता है।
- वह प्रकृति के साथ तालमेल नहीं बिठा पाता है।
- वह अपने छोटेपन को भूल अहंकारी हो जाता है।

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ विचार कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

पंक्तियों पर चर्चा

नीचे दी गई पंक्तियों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। अपने समूह में इनके अर्थ पर चर्चा कीजिए और लिखिए—

(क) "अनगिन नक्षत्रों में / पृथ्वी एक छोटी / करोड़ों में एक ही।"

(ख) "संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है / अपने को दूजे का स्वामी बताता है।"

(ग) "देशों की कौन कहे / एक कमरे में / दो दुनिया रचाता है।"



मिलकर करें मिलान

नीचे दो स्तंभ दिए गए हैं। अपने समूह में चर्चा करके स्तंभ 1 की पंक्तियों का मिलान स्तंभ 2 में दिए गए सही अर्थ से कीजिए।

क्रम	स्तंभ 1	स्तंभ 2
1.	संख्यातीत शंख सी दीवारें	1. ब्रह्मांड की विशालता का प्रतीक
2.	पृथ्वी एक छोटी, करोड़ों में एक	2. आदमी के संकुचित होने का प्रतीक
3.	ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा	3. मनुष्य द्वारा खींची गई कृत्रिम सीमाएँ
4.	दो व्यक्ति कमरे में / कमरे से छोटे	4. सीमित स्थान में भी और अलगाव की प्रवृत्ति
5.	परिधि नभ गंगा की	5. पृथ्वी की अल्पता और अनोखेपन की ओर संकेत
6.	एक कमरे में दो दुनिया रचाता	6. मनुष्य की नकारात्मक भावनाएँ

अनुपात

इस कविता में 'मानव' और 'ब्रह्मांड' के उदाहरण द्वारा व्यक्ति के अल्पत्व और सृष्टि की विशालता के अनुपात को दिखाया गया है। अपने साथियों के साथ मिलकर विचार कीजिए कि मानव को ब्रह्मांड जैसा विस्तार पाने के लिए इनमें से किन-किन गुणों या मूल्यों की आवश्यकता होगी? आपने ये गुण क्यों चुने, यह भी साझा कीजिए।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

सहअस्तित्व | विस्तार | सौहार्द | विविधता

वर्चस्व | ईर्ष्या

विशालता | सत्ता

सीमाबद्धता | विरोध

लघुता | अहंकार

संतुलन | मतभेद

समावेशिता | स्वार्थ



अविश्वास | स्वतंत्रता | सहनशीलता | शांति

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



सोच-विचार के लिए

कविता को पुनः पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

(क) कविता के अनुसार मानव किन कारणों से स्वयं को सीमाओं में बाँधता चला जाता है?

(ख) यदि आपको इस कविता की एक पंक्ति को दीवार पर लिखना हो, जो आपको प्रतिदिन प्रेरित करे तो आप कौन-सी पंक्ति चुनेंगे और क्यों?

(ग) कवि ने मानव की सीमाओं और कमियों की ओर ध्यान दिलाया है, लेकिन कहीं भी क्रोध नहीं दिखाया। आपको इस कविता का भाव कैसा लगा— व्यंग्य, करुणा, चिंता या कुछ और? क्यों?

(घ) आपके अनुसार 'दीवारें उठाना' केवल ईंट-पत्थर से जुड़ा काम है या कुछ और भी हो सकता है? अपने विचारानुसार समझाइए।

(ङ) मानवता के विकास में सहयोग, समर्पण और सहिष्णुता जैसी सकारात्मक प्रवृत्तियाँ ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ और घृणा जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियों से कहीं अधिक प्रभावी हैं। उदाहरण देकर बताइए कि सहिष्णुता या सहयोग के कारण समाज में कैसे परिवर्तन आए हैं?



अनुमान और कल्पना

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए—

(क) मान लीजिए कि आप एक दिन के लिए पूरे ब्रह्मांड को नियंत्रित कर सकते हैं। अब आप मानव की कौन-कौन सी आदतों को बदलना चाहेंगे? क्यों?

(ख) यदि आप अंतरिक्ष यात्री बन जाएँ और ब्रह्मांड के किसी दूसरे भाग में जाएँ तो आप किस स्थान (कमरा, घर, नगर आदि) को सबसे अधिक याद करेंगे और क्यों?

(ग) मान लीजिए कि एक बच्चा या बच्ची कविता में उल्लिखित सभी सीमाओं को पार कर सकता या सकती है— वह कहाँ तक जाएगा या जाएगी और क्या देखेगा या देखेगी? एक कल्पनात्मक यात्रा-वृत्तांत लिखिए।

(घ) इस कविता को पढ़ने के बाद, आप स्वयं को ब्रह्मांड के अनुपात में कैसा अनुभव करते हैं? एक अनुच्छेद लिखिए— "मैं ब्रह्मांड में एक… हूँ।"

(ङ) मान लीजिए कि किसी दूसरे संसार से आपके पास संदेश आया है कि उसे पृथ्वी के किसी व्यक्ति की आवश्यकता है। आप किसे भेजना चाहेंगे और क्यों?

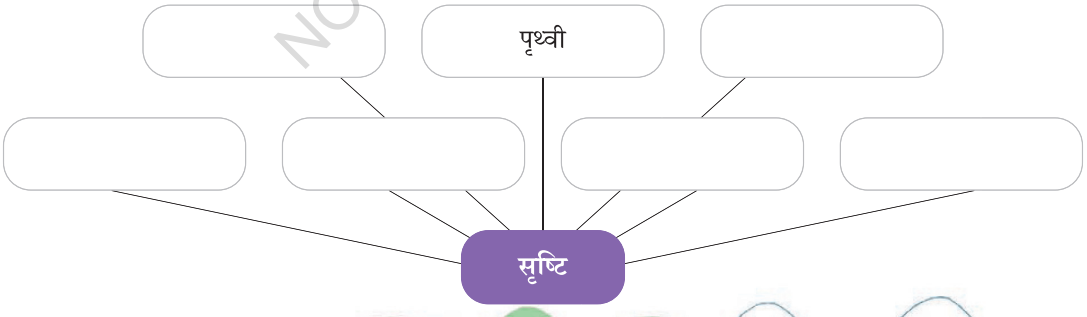
(च) कविता में "ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ" जैसी प्रवृत्तियों की चर्चा की गई है। कल्पना कीजिए कि एक दिन के लिए ये भाव सभी व्यक्तियों में समाप्त हो जाएँ तो उससे समाज में क्या-क्या परिवर्तन होगा?

(छ) यदि आपको इस कविता का एक पोस्टर बनाना हो जिसमें इसके मूल भाव— 'विराटता और लघुता' तथा 'मनुष्य का भ्रम'— दर्शाया जाए तो आप क्या चित्र, प्रतीक और शब्द उपयोग करेंगे? संक्षेप में बताइए।



शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में 'सृष्टि' से जुड़े शब्द अपने समूह में चर्चा करके लिखिए —



© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED



सृजन

(क) कविता में कमरे से लेकर ब्रह्मांड तक का विस्तार दिखाया गया है। इस क्रम को अपनी तरह से एक रेखाचित्र, सीढ़ी या 'मानसिक-चित्रण' (माइंड-मैप) द्वारा प्रदर्शित कीजिए। प्रत्येक स्तर पर कुछ विशेषताएँ लिखिए, जैसे— पास-पड़ोस की एक विशेष बात, नगर का कोई स्थान, देश की विविधता आदि। उसके नीचे एक पंक्ति में इस प्रश्न का उत्तर लिखिए— "मैं इस चित्र में कहाँ हूँ और क्यों?"

(ख) अगर इसी कविता की तरह कोई कहानी लिखनी हो जिसका नाम हो 'ब्रह्मांड में मानव' तो उसको आरंभ कैसे करेंगे? कुछ वाक्य लिखिए।

(ग) 'एक कमरे में दो दुनिया रचाता है' पंक्ति को ध्यान से पढ़िए। अगर आपसे कहा जाए कि आप एक ऐसी दुनिया बनाइए जिसमें कोई दीवार न हो तो वह कैसी होगी? उसका वर्णन कीजिए।

(घ) एक चित्र शृंखला बनाइए जिसमें ये क्रम दिखे—

आदमी → कमरा → घर → पड़ोसी क्षेत्र → नगर → देश → पृथ्वी → ब्रह्मांड

प्रत्येक चित्र में आकार का अनुपात दिखाया जाए जिससे यह स्पष्ट हो कि आदमी कितना छोटा है।



कविता की रचना

'दो व्यक्ति कमरे में

कमरे से छोटे—

इन पंक्तियों में '—' चिह्न पर ध्यान दीजिए। क्या आपने इस चिह्न को पहले कहीं देखा है? इस चिह्न को 'निदेशक चिह्न' कहते हैं। यह एक प्रकार का विराम चिह्न है जो किसी बात को आगे बढ़ाने या स्पष्ट करने के लिए उपयोग होता है। यह किसी विषय की अतिरिक्त जानकारी, जैसे— व्याख्या, उदाहरण या उद्धरण देने के लिए उपयोग होता है। इस कविता में इस चिह्न का प्रयोग एक ठहराव, सोच का संकेत और आगे आने वाले महत्वपूर्ण विचार की ओर पाठक का ध्यान आकर्षित करने के लिए किया गया है। यह संकेत देता है कि अब कुछ ऐसा कहा जाने वाला है जो पाठक को सोचने पर विवश करेगा।

इस कविता में ऐसी अनेक विशेषताएँ छिपी हैं, जैसे— अधिकतर पंक्तियों का अंतिम शब्द 'में' है, बहुत छोटी-छोटी पंक्तियाँ हैं आदि।



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

(क) अपने समूह के साथ मिलकर कविता की अन्य विशेषताओं की सूची बनाइए। अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

(ख) नीचे इस कविता की कुछ विशेषताएँ और वे पंक्तियाँ दी गई हैं जिनमें ये विशेषताएँ झलकती हैं। विशेषताओं का सही पंक्तियों से मिलान कीजिए—

क्रम	कविता की विशेषताएँ	कविता की पंक्तियाँ
1.	सरल वाक्य के शब्दों को विशेष क्रम में लगाया गया है।	1. संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है
2.	मुहावरे का प्रयोग किया गया है।	2. कमरा है घर में, घर है मोहल्ले में, मोहल्ला नगर में…
3.	छोटे से बड़े की ओर विस्तार देने के लिए शब्दों को दोहराया गया है।	3. देशों की कौन कहे, एक कमरे में दो दुनिया रचाता है
4.	प्रश्न शैली में व्यंग्य किया गया है।	4. कमरा है घर में
5.	अतिशयोक्ति से भरा कथन है (बढ़ा-चढ़ाकर कहना)।	5. यह है अनुपात आदमी का विराट से
6.	मानव के अहंकार पर तीखा व्यंग्य किया गया है।	6. अपने को दूजे का स्वामी बताता है



कविता का सौंदर्य

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपने समूह में मिलकर खोजिए। इन प्रश्नों से आप कविता का आनंद और अच्छी तरह से ले सकेंगे।

(क) कविता में अलग-अलग प्रकार से ब्रह्मांड की विशालता को व्यक्त किया गया है। उनकी पहचान कीजिए।

(ख) "संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है"

"अपने को दूजे का स्वामी बताता है"

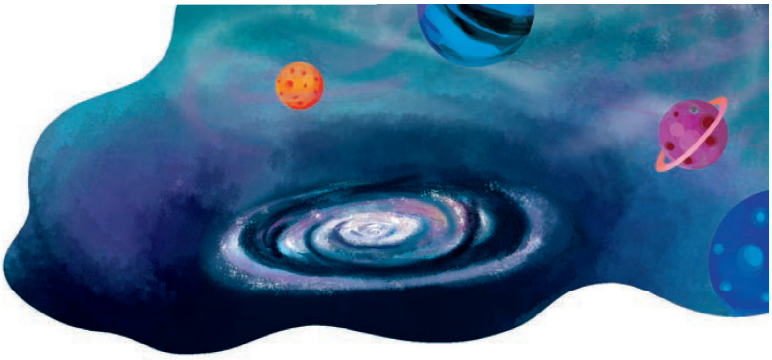
"एक कमरे में

दो दुनिया रचाता है"

कविता में ये सारी क्रियाएँ मनुष्य के लिए आई हैं। आप अपने अनुसार कविता में नई क्रियाओं का प्रयोग करके कविता की रचना कीजिए।



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



आपके शब्द

"सबको समेटे है

परिधि नभ गंगा की"

आपने 'आकाशगंगा' शब्द सुना और पढ़ा होगा। लेकिन कविता में 'नभ गंगा' जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया है। यह शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है।

आप भी अपने समूह में मिलकर इसी प्रकार दो शब्दों को मिलाकर नए शब्द बनाइए।

आपके प्रश्न

"हर ब्रह्मांड में

कितनी ही पृथ्वियाँ

कितनी ही भूमियाँ

कितनी ही सृष्टियाँ"

क्या आपके मस्तिष्क में कभी इस प्रकार के प्रश्न आते हैं? अवश्य आते होंगे। अपने समूह के साथ मिलकर अपने मन में आने वाले प्रश्नों की सूची बनाइए। अपने शिक्षक, इंटरनेट और पुस्तकालय की सहायता से इन प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने का प्रयास कीजिए।



© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

विशेषण और विशेष्य

"पृथ्वी एक छोटी"

यहाँ 'छोटी' शब्द 'पृथ्वी' की विशेषता बता रहा है अर्थात 'छोटी' 'विशेषण' है। 'पृथ्वी' एक संज्ञा शब्द है जिसकी विशेषता बताई जा रही है। अर्थात 'पृथ्वी' 'विशेष्य' शब्द है।



अब आप नीचे दी गई पंक्तियों में विशेषण और विशेष्य शब्दों को पहचानकर लिखिए —

पंक्ति	विशेषण	विशेष्य
1. दो व्यक्ति कमरे में	दो	व्यक्ति
2. अनगिन नक्षत्रों में		
3. लाखों ब्रह्मांडों में		
4. अपना एक ब्रह्मांड		
5. संख्यातीत शंख सी		
6. एक कमरे में		
7. दो दुनिया रचाता है		

पाठ से आगे



आपकी बात



(क) कोई ऐसी स्थिति बताइए जहाँ 'अनुपात' बिगड़ गया हो— जैसे काम का बोझ अधिक और समय कम।

(ख) आप अपने परिवार, विद्यालय या मोहल्ले में 'विराटता' (विशाल दृष्टिकोण) कैसे ला सकते हैं? कुछ उपाय सोचकर लिखिए। (संकेत— किसी को अनदेखा न करना, सबकी सहायता करना आदि)

(ग) 'करोड़ों में एक ही पृथ्वी'— इस पंक्ति को पढ़कर आपके मन में क्या भाव आता है? आप इस अनोखी पृथ्वी को सुरक्षित रखने के लिए क्या-क्या करेंगे?

(घ) कविता हमें 'अपने को दूजे का स्वामी बताने' के प्रति सचेत करती है। आप अपने किन-किन गुणों को प्रबल करेंगे ताकि आपमें ऐसा भाव न आए?

(ङ) अपने जीवन में ऐसी तीन 'दीवारों' के विषय में सोचिए जो आपने स्वयं खड़ी की हैं (जैसे— डर, संकोच आदि)। फिर एक योजना बनाइए कि आप उन्हें कैसे तोड़ेंगे? क्या समाज में भी ऐसी दीवारें होती हैं? उन्हें गिराने में हम कैसे सहायता कर सकते हैं?

@KIDS NOT TO BE REPUBLISHED

संख्यातीत शंख



"संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है"

शंख का अर्थ है— 100 पद्म की संख्या।

नीचे भारतीय संख्या प्रणाली एक तालिका के रूप में दी गई है।

हिंदी	संख्या	गणितीय संख्या
एक (इकाई)	1	10^0
दस (दहाई)	10	10^1
सौ (सैकड़ा)	100	10^2
सहस्त्र (हजार)	1,000	10^3
दस हजार	10,000	10^4
लाख	1,00,000	10^5
दस लाख	10,00,000	10^6
करोड़	1,00,00,000	10^7
दस करोड़	10,00,00,000	10^8
अरब	1,00,00,00,000	10^9
दस अरब	10,00,00,00,000	10^{10}
खरब	1,00,00,00,00,000	10^{11}
दस खरब	10,00,00,00,00,000	10^{12}
नील	1,00,00,00,00,00,000	10^{13}
दस नील	10,00,00,00,00,00,000	10^{14}
पद्म	1,00,00,00,00,00,00,000	10^{15}
दस पद्म	10,00,00,00,00,00,00,000	10^{16}
शंख	1,00,00,00,00,00,00,00,000	10^{17}
दस शंख	10,00,00,00,00,00,00,00,000	10^{18}
महाशंख	1,00,00,00,00,00,00,00,00,000	10^{19}

©KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

तालिका के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर खोजिए —



1. जिस संख्या में 15 शून्य होते हैं, उसे क्या कहते हैं?
2. महाशंख में कितने शून्य होते हैं?
3. एक लाख में कितने हजार होते हैं?
4. उपर्युक्त तालिका के अनुसार सबसे छोटी और सबसे बड़ी संख्या कौन-सी है?
5. दस करोड़ और एक अरब को जोड़ने पर कौन-सी संख्या आएगी?



समावेशन और समानता

जैसे पृथ्वी अनगिनत नक्षत्रों में एक छोटा-सा ग्रह है, वैसे ही प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह विशेष आवश्यकता वाला हो या न हो, समाज का एक महत्वपूर्ण भाग है।

एक समूह चर्चा आयोजित करें जिसमें सभी मानवों के लिए समान अवसरों की आवश्यकता पर बल दिया जाए। (भले ही उनका जेंडर, आय, मत, विश्वास, शारीरिक रूप, रंग या आकार-प्रकार आदि कैसा भी हो)



आज की पहेली

पता लगाइए कि कौन-सा अंतरिक्ष यान कौन-से ग्रह पर जाएगा—



© NCERT @KTBS NOT TO BE REPUBLISHED





झरोखे से

आइए, अब पढ़ते हैं प्रसिद्ध गीत 'होंगे कामयाब'।

होंगे कामयाब!

होंगे कामयाब
होंगे कामयाब
हम होंगे कामयाब... एक दिन

मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब... एक दिन

होगी शांति चारों ओर
होगी शांति चारों ओर
होगी शांति चारों ओर... एक दिन
मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास, हम होंगे कामयाब... एक दिन

नहीं डर किसी का आज
नहीं भय किसी का आज

नहीं डर किसी का
आज के दिन
मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब... एक दिन

हम चलेंगे साथ-साथ
डाल हाथों में हाथ
हम चलेंगे साथ-साथ... एक दिन
मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब... एक दिन



भावांतर
— गिरिजा कुमार माथुर

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED





साझी समझ

गिरिजा कुमार माथुर की अन्य रचनाएँ पुस्तकालय या इंटरनेट पर खोजकर पढ़िए और कक्षा में साझा कीजिए।



खोजबीन के लिए

- हम होंगे कामयाब एक दिन

https://www.youtube.com/watch?v=xlTlzqvMa-Q

https://www.youtube.com/watch?v=dJ7BW1CgoWI

- कल्पना जो सितारों में खो गई

https://www.youtube.com/watch?v=Xhv0L2frHn8

- सुनीता अंतरिक्ष में

https://www.youtube.com/watch?v=I1cDmCthPaA

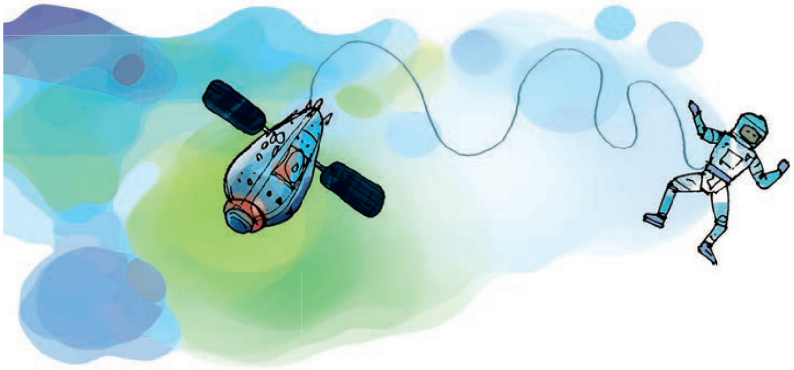
- ब्रह्माण्ड और पृथ्वी

https://www.youtube.com/watch?v=b8udjzy7zCA

- हौसलों की उड़ान-मंगलयान

https://www.youtube.com/watch?v=JTCk48RT1Ws

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



10 तरुण के स्वप्न



0871CH10

नेताजी सुभाषचंद्र बोस ऐसे स्वाधीन संपन्न समाज और राष्ट्र का सपना देखते थे जिसमें व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो और समाज तथा राष्ट्र की सेवा में समान रूप से भागीदार बने। वे अपने उद्‌बोधनों में नारी मुक्ति और सभी को शिक्षा तथा समान अवसर मिलने की बात भी करते थे। अपना यह स्वप्न वे युवाओं को सौंपना चाहते थे जिससे आदर्श समाज और आदर्श राष्ट्र का रूप साकार हो सके। आइए, अब हम नेताजी के उस उद्‌बोधन के विषय में जानते हैं जो उन्होंने मेदिनीपुर जिला युवक-सम्मेलन में 29 दिसंबर, 1929 को युवाओं को संबोधित करते हुए प्रगट किया था।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

स्वप्न तो अनेकों ने देखा। हमारे नेता स्वर्गीय देशबंधु चित्तरंजन दास ने भी एक स्वप्न देखा था। वही स्वप्न उनकी शक्ति का उत्स बना और उनके आनंद का निर्झर रहा। उनके स्वप्न के उत्तराधिकारी आज हम हैं। इसलिए हमारा भी अपना एक स्वप्न है, इसी स्वप्न की प्रेरणा से हम उठते हैं, बैठते हैं, चलते हैं, फिरते हैं और लिखते हैं, भाषण देते हैं, काम-काज करते हैं। वह स्वप्न या आदर्श क्या है? हम चाहते हैं, एक नया सर्वांगीण स्वाधीन संपन्न समाज और उस पर एक स्वाधीन राष्ट्र। उस समाज में व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो तथा समाज के दबाव से वह मरे नहीं। उस समाज में जातिभेद का स्थान नहीं हो, उस समाज में नारी मुक्त होकर समाज एवं राष्ट्र के पुरुषों की तरह समान अधिकार का उपभोग करे और समाज तथा राष्ट्र की सेवा में समान रूप से हिस्सा ले, उस समाज में अर्थ की विषमता न हो, उस समाज में प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा और उन्नति का समान सुअवसर पाए। जिस समाज में श्रम और कर्म की पूरी मर्यादा होगी और आलसी तथा अकर्मण्य के लिए कोई स्थान नहीं रहेगा, वह राष्ट्र





किसी भी विजातीय प्रभाव से हर प्रकार से मुक्त रहेगा। जो राष्ट्र हमारे स्वदेशी समाज के यंत्र के रूप में काम करेगा, सर्वोपरि वह समाज और राष्ट्र भारतवासियों का अभाव मिटाएगा या भारतवासी के आदर्श को सार्थक बनाकर ही स्थिर नहीं होगा, बल्कि विश्व-मानव के समक्ष आदर्श-समाज और आदर्श-राष्ट्र के रूप में गण्य होगा। मैं ऐसे समाज और ऐसे राष्ट्र का ही स्वप्न देखता रहा हूँ। यह स्वप्न मेरे समक्ष नित्य एवं अखंड सत्य है। इस सत्य की प्रतिष्ठा के लिए सबकुछ किया जा सकता है, हर प्रकार का त्याग किया जा सकता है, हर संकट को सहा जा सकता है और इस स्वप्न को सार्थक बनाने के दौरान प्राण देना भी है तो 'वह मरण है स्वर्ग समान'। हे मेरे तरुण भाइयो! तुम्हें देने लायक मेरे पास कुछ भी नहीं है, है सिर्फ यही स्वप्न जो हमें असीम शक्ति और अपार आनंद देता है, जो मेरे क्षुद्र जीवन को भी सार्थक बनाता है। यह स्वप्न मैं तुम्हें उपहारस्वरूप देता हूँ— स्वीकार करो।

— *सुभाषचंद्र बोस*

NOT TO BE REPUBLISHED © BSS



लेखक से परिचय

उड़ीसा (अब ओड़िशा) राज्य के कटक नगर में जन्मे सुभाषचंद्र बोस को पूरा देश 'नेताजी' के नाम से जानता है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उनका उद्देश्य स्पष्ट था— भारत को अँग्रेजी शासन से मुक्त कराना। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष करते हुए उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। स्वतंत्रता की लड़ाई में उनकी दूरदर्शिता का पता तब चलता है जब उन्होंने 'आजाद हिंद फौज' का नेतृत्व संभाला। सन् 1857 में भारतीय सैनिकों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए जिस तरह एकजुट होकर युद्ध किया, उसके बाद सुभाषचंद्र बोस ही ऐसे महान सेनानी हुए जिन्होंने 'आजाद हिंद फौज' के माध्यम से एकजुट होकर अंग्रेजों को चुनौती दी। उन्होंने सैनिकों को 'दिल्ली चलो' और 'जय हिंद' का नारा दिया। सुभाषचंद्र बोस ने भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिए क्रांति का ऐसा बिगुल बजाया कि पूरा देश 'जय हिंद' के नारों से गूँज उठा। उन्होंने 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' जैसा प्रेरक नारा भी दिया। सुभाषचंद्र बोस ने एक स्वाधीन राष्ट्र और आत्मनिर्भर समाज का सपना देखा। उनके जीवन के विषय में जानना भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास को जानना है। द *इंडियन स्ट्रगल* उनकी चर्चित पुस्तक है। प्रकाशन विभाग, भारत सरकार ने नेताजी सुभाषचंद्र बोस का वाङ्मय (संपूर्ण लेखन) प्रकाशित किया है। इस प्रकाशन में उनके उपलब्ध सभी कार्यों, पत्रों, टिप्पणियों, भाषणों आदि को सम्मिलित किया गया है।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

पाठ से

आइए, अब हम इस पाठ पर विस्तार से चर्चा करें। आगे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

(1) "उनके स्वप्न के उत्तराधिकारी आज हम हैं।" इस कथन में रेखांकित शब्द 'हम' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

- सुभाषचंद्र बोस के लिए
- देश के तरुण वर्ग के लिए
- चित्तरंजन दास के लिए
- भारतवासियों के लिए



(2) स्वाधीन राष्ट्र का स्वप्न साकार होगा?



- आर्थिक असमानता से
- स्त्री-पुरुष के भिन्न अधिकारों से
- श्रम और कर्म की मर्यादा से
- जातिभेद से

(3) "उनके स्वप्न के उत्तराधिकारी आज हम हैं।" 'उत्तराधिकारी' होने से क्या अभिप्राय है?

- हमें उनके स्वप्नों को संजोकर रखना है
- हमें भी उनकी तरह स्वप्न देखने का अधिकार है
- उनके स्वप्नों को पूरा करने के लिए हमें ही कर्म करना है
- उनके स्वप्नों पर चर्चा करने का दायित्व हमारा ही है

(4) जब प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा और उन्नति का समान अवसर प्राप्त होगा तब—



- राष्ट्र की श्रम-शक्ति बढ़ेगी
- तरुणों का साहस बढ़ेगा
- राष्ट्र स्वाधीन बनेगा
- राष्ट्र स्वप्नदर्शी होगा

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?



मिलकर करें मिलान

नीचे स्तंभ 1 में पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं और स्तंभ 2 में उन पंक्तियों से संबंधित भाव-विचार दिए गए हैं। स्तंभ 1 में दी गई पंक्तियों का स्तंभ 2 में दिए गए भाव-विचार से सही मिलान कीजिए।

क्रम	स्तंभ 1	स्तंभ 2
1.	"इसी स्वप्न की प्रेरणा से हम उठते हैं, बैठते हैं, चलते हैं, फिरते हैं और लिखते हैं, भाषण देते हैं, काम-काज करते हैं।"	1. समाज में सभी व्यक्तियों को सभी तरह की स्वतंत्रता हो और उस पर किसी तरह का बंधन या सामाजिक दबाव न हो।
2.	"जो राष्ट्र हमारे स्वदेशी समाज के यंत्र के रूप में काम करेगा, सर्वोपरि वह समाज और राष्ट्र भारतवासियों का अभाव मिटाएगा।"	2. हमारी समूची दिनचर्या और आचार-विचार इसी लक्ष्य (स्वप्न) की प्राप्ति पर केंद्रित हैं।
3.	"उस समाज में व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो तथा समाज के दबाव से वह मरे नहीं।"	3. जिस देश की योजनाएँ हमारे अपने समाज को ध्यान में रखकर बनाई जाएँगी, उस देश में किसी भी प्रकार का अभाव नहीं होगा।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED



पंक्तियों पर चर्चा

पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपनी कक्षा में साझा कीजिए।

(क) "उस समाज में अर्थ की विषमता न हो।"

(ख) "वही स्वप्न उनकी शक्ति का उत्स बना और उनके आनंद का निर्झर रहा।"

(ग) "उस समाज में व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो।"



सोच-विचार के लिए

अब आप इस पाठ को पुन: पढ़िए और निम्नलिखित के विषय में पता लगाकर लिखिए—

(क) नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने किस प्रकार के राष्ट्र निर्माण का स्वप्न देखा था?

(ख) नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने किस लक्ष्य की प्राप्ति को अपने जीवन की सार्थकता के रूप में देखा?

(ग) "आलसी तथा अकर्मण्य के लिए कोई स्थान नहीं रहेगा" सुभाषचंद्र बोस ने ऐसा क्यों कहा होगा?

(घ) नेताजी सुभाषचंद्र बोस के लक्ष्यों या ध्येय को पूरा करने के लिए आज की युवा पीढ़ी क्या-क्या कर सकती है?



अनुमान और कल्पना से

(क) "उस समाज में व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो", सुभाषचंद्र बोस ने किन-किन दृष्टियों से मुक्ति की बात की होगी?

(ख) "उस समाज में नारी मुक्त होकर समाज एवं राष्ट्र के पुरुषों की तरह समान अधिकार का उपभोग करे", सुभाषचंद्र बोस को अपने भाषण में नारी के लिए समान अधिकारों की बात क्यों कहनी पड़ी?

(ग) आपके विचार से हमारे समाज में और कौन-कौन से लोग हैं जिन्हें विशेष अधिकार दिए जाने की आवश्यकता है?

(घ) सुभाषचंद्र बोस देश के समस्त युवा वर्ग को संबोधित करते हुए कहते हैं— "हे मेरे तरुण भाइयो!" उनका संबोधन केवल 'भाइयो' शब्द तक ही क्यों सीमित रहा होगा?

(ङ) "यह स्वप्न मैं तुम्हें उपहारस्वरूप देता हूँ— स्वीकार करो।" सुभाषचंद्र बोस के इस आह्वान पर श्रोताओं (युवा वर्ग) की क्या प्रतिक्रिया रही होगी?

@KIRS NOT TO BE REPUBLISHED

शीर्षक

(क) आपने नेताजी सुभाषचंद्र बोस के भाषण का एक अंश पढ़ा है, इसे 'तरुण के स्वप्न' शीर्षक दिया गया है। अपने समूह में चर्चा करके लिखिए कि यह शीर्षक क्यों दिया गया होगा?

(ख) यदि आपको भाषण के इस अंश को कोई अन्य नाम देना हो तो क्या नाम देंगे? आपने यह नाम क्यों सोचा? यह भी लिखिए।

(ग) सुभाषचंद्र बोस ने अपने समय की स्थितियों या समस्याओं को अपने संबोधन में स्थान दिया है। यदि आपको अपनी कक्षा को संबोधित करने का अवसर मिले तो आप किन-किन विषयों को अपने उद्‌बोधन में सम्मिलित करेंगे और उसका क्या शीर्षक रखेंगे?

भाषा की बात

(क) सुभाषचंद्र बोस ने अपने भाषण में संख्या, संगठन या भाव आदि का बोध कराने वाले शब्दों के साथ उनकी विशेषता अथवा गुण बताने वाले शब्दों का प्रयोग किया है। उनके भाषण से विशेषता अथवा गुण बताने वाले शब्द ढूँढ़कर दिए गए शब्द समूह को पूरा कीजिए—

अखंड	सत्य	_____	जीवन
_____	समाज	_____	शक्ति
_____	राष्ट्र	_____	आनंद

(ख) सुभाषचंद्र बोस ने तो उपर्युक्त विशेषताओं के साथ इन शब्दों को रखा है। आप किन विशेषताओं के साथ इन उपर्युक्त शब्दों को रखना चाहेंगे और क्यों? लिखिए।

विपरीतार्थक शब्द और उनके प्रयोग



(क) "और उस पर एक स्वाधीन राष्ट्र" इस वाक्यांश में रेखांकित शब्द 'स्वाधीन' का विपरीत अर्थ देने वाला शब्द है 'पराधीन'। इसी प्रकार के कुछ विपरीतार्थक शब्द आगे दिए गए हैं, लेकिन वे आमने-सामने नहीं हैं। रेखाएँ खींचकर विपरीतार्थक शब्दों के सही जोड़े बनाइए—

© @KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

क्रम	स्तंभ 1	स्तंभ 2
1.	स्वीकार	कर्मण्य/कर्मठ
2.	सार्थक	विपन्न
3.	विषमता	अस्वीकार
4.	क्षुद्र	जीवन
5.	संपन्न	निरर्थक
6.	अकर्मण्य	समानता
7.	मरण	विशाल/वृहत/विराट/महान



(ख) अब स्तंभ 1 और स्तंभ 2 के सभी शब्दों से दिए गए उदाहरण के अनुसार वाक्य बनाकर लिखिए, जैसे—
"समाज की उन्नति अकर्मण्य नहीं अपितु कर्मण्य व्यक्तियों पर निर्भर है।"



पाठ से आगे



आपकी बात

(क) आपने सुभाषचंद्र बोस के स्वप्न के बारे में जाना। आप अपने विद्यालय, राज्य और देश के बारे में कैसे स्वप्न देखते हैं? लिखिए।

(ख) हमें बड़े संघर्षों के बाद स्वतंत्रता मिली है। अपनी इस स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए हम अपने स्तर पर क्या-क्या कर सकते हैं? लिखिए।



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



मिलान कीजिए

(क) नीचे स्तंभ 1 में स्वतंत्रता सेनानियों से संबंधित कुछ तथ्य दिए गए हैं और स्तंभ 2 में स्वतंत्रता सेनानियों के नाम दिए गए हैं। तथ्यों का स्वतंत्रता सेनानियों के नाम से रेखा खींचकर सही मिलान कीजिए। इसके लिए आप अपने शिक्षकों, अभिभावकों और पुस्तकालय तथा इंटरनेट की सहायता ले सकते हैं।

क्रम	स्तंभ 1	स्तंभ 2
1.	8 अप्रैल, 1929 को 'सेंट्रल असेंबली' में बम फेंकने वाले क्रांतिकारी, 'शहीद-ए-आज़म' के नाम से जाने जाते हैं।	1. सरदार वल्लभभाई पटेल
2.	'स्वराज पार्टी' के संस्थापकों में से एक, सुभाषचंद्र बोस के राजनीतिक गुरु कहे जाते हैं।	2. महात्मा गाँधी
3.	जेल में क्रांतिकारियों के साथ राजबंदियों के समान व्यवहार न होने के कारण क्रांतिकारियों ने 13 जुलाई 1929 से भूख हड़ताल शुरू कर दी। अनशन के तिरसठवें दिन जेल में इनका देहांत हो गया।	3. चंद्रशेखर आजाद
4.	इनके जन्मदिवस पर 'अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस' मनाया जाता है।	4. चित्तरंजन दास
5.	नर्मदा नदी के तट पर इनकी एक विशाल प्रतिमा स्थापित है। जिसे 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' कहा जाता है।	5. जतिन दास
6.	1921 में असहयोग आंदोलन में गिरफ्तार होने पर न्यायाधीश ने इनसे पिता का नाम पूछा तो इन्होंने कहा— "मेरा नाम आजाद है, पिता का नाम स्वतंत्रता और पता कारावास है।"	6. भगत सिंह

(ख) इनमें से एक स्वतंत्रता सेनानी का नाम 'तरुण के स्वप्न' पाठ में भी आया है। उसे पहचान कर लिखिए।



सर्वांगीण स्वाधीन संपन्न समाज के लिए प्रयास

नेताजी सुभाषचंद्र बोस और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने स्वाधीन संपन्न समाज की स्थापना के लिए अपने समय में अनेक प्रयास किए। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात इस दिशा में क्या-क्या उल्लेखनीय प्रयत्न किए गए हैं? अपनी सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक, अपने अनुभवों एवं पुस्तकालय की सहायता से लिखिए।

@KTRS NOT TO BE REPUBLISHED



स्त्री सशक्तीकरण

(क) सुभाषचंद्र बोस ने स्त्रियों के लिए समान अधिकार की बात की है। अपने अनुभवों के आधार पर बताइए कि उन्हें कौन-कौन से विशेषाधिकार राज्य की ओर से दिए गए हैं?

(ख) सुभाषचंद्र बोस ने 'आजाद हिंद फौज' का नेतृत्व किया था। उसमें एक टुकड़ी स्त्रियों की भी थी। उस टुकड़ी का नाम पता लगाकर लिखिए। उस टुकड़ी की भूमिका क्या थी? यह भी बताइए।



आपके प्रिय स्वतंत्रता सेनानी

आप किस स्वतंत्रता सेनानी के कार्यों व विचारों से प्रभावित हैं? कारण सहित लिखिए और अभिनय (रोल प्ले) करते हुए उनके विचारों को कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।



"तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।"

ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष में 1944 में सुभाषचंद्र बोस ने 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' नारे के माध्यम से आह्वान किया था। स्वाधीनता संग्राम के दौरान और भी बहुत से नारे दिए गए। ये नारे स्वतंत्रता सेनानियों के अदम्य साहस, निर्भीकता और देश-प्रेम को दर्शाते हैं।

नीचे स्तंभ 1 में कुछ नारे दिए गए हैं। नारों के सामने लिखिए कि यह किसके द्वारा दिया गया? आप पुस्तकालय या इंटरनेट की सहायता भी ले सकते हैं।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

नारा	स्वतंत्रता सेनानी
स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।	
करो या मरो	
मैं आजाद हूँ, आजाद रहूँगा और आजाद ही मरूँगा	
इंकलाब जिंदाबाद, साम्राज्यवाद मुर्दाबाद	
पूर्ण स्वराज	



परियोजना कार्य

आप सभी राज्यों के स्वतंत्रता सेनानियों के विषय में पढ़कर उनमें से 10 महिला एवं 10 पुरुष स्वतंत्रता सेनानियों के चित्रों का संग्रह करके एक संग्रहिका तैयार कीजिए। चित्रों के नीचे उनके विशेष योगदान के बारे में एक-दो वाक्य भी लिखिए। अपनी संग्रहिका तैयार करते समय ध्यान रखिए कि आप किसी भी राज्य से एक से अधिक व्यक्ति न चुने।



झरोखे से

आपने जो पाठ पढ़ा है उसमें सुभाषचंद्र बोस तरुणों से अपने सपनों की बात करते हैं। अब आप नेताजी सुभाषचंद्र बोस द्वारा लिखित पत्र पढ़िए जिसमें उन्होंने गृह एवं कुटीर उद्योग पर अपने विचार व्यक्त किए हैं—

गृहउद्योग के विषय में नेताजी का एक पत्र

मुझे जहाँ तक याद है (मैं मात्र एक बार 'पॉलिटेकनीक' में गया था), पॉलिटेकनीक के सभी कामों में एकमात्र बेंत का काम अथवा मिट्टी के खिलौने बनाने का काम हमें गृह-उद्योग के रूप में चलाना होगा। अब यदि अंत में मिट्टी के खिलौने बनाने का काम चलाने का प्रस्ताव हो तो कोई भी कुछ दिनों में ही यह काम सीख सकता है। खर्च कुछ भी नहीं लगेगा और हम जब गृह-उद्योग प्रारंभ करेंगे तब मात्र रंगों के लिए कुछ नकद रुपये खर्च होंगे। इसके अलावा बहुत कम खर्च होगा।

एक बात मेरे मन में बार-बार उठती रहती है— पहले भी शायद इस विषय में मैंने लिखा है— सीप के बटन तैयार करना। बंगाल के बहुत-से गाँवों में यह काम घर-घर में हो रहा है। गरीब गृहस्थों के घरों में स्त्री-पुरुष अपनी फुरसत के समय में यह काम करते रहते हैं। किसी एक कार्यकर्ता को बहुत कम समय में यह काम सिखाया जा सकता है। अथवा यह काम जानने और सिखाने वाले एक नए कार्यकर्ता को आप लोग नियुक्त कर सकते हैं। मुझे लगता है कि पत्थरों के ऊपर घिसकर बटन बनाया जा सकता है— हम चाहें तो बना सकते हैं। सिर्फ पतला कोई यंत्र हो जिससे छेद किया जा सके। इसके अलावा गोल काटने के लिए एक धारदार यंत्र की आवश्यकता पड़ सकती है। समिति की ओर से कुछ यंत्र और एक बोरा सीप मँगाकर ही यह काम प्रारंभ किया जा सकता है। काम सहायता-प्रार्थियों में आबद्ध रहेगा, किंतु एक बार कारगर होने पर आप देखेंगे कि गरीब परिवार अपनी आय बढ़ाने के लिए यह काम स्वयं आरंभ कर देगा। समिति सिर्फ सस्ते दामों में रॉ मैटीरियल आदि जुटा देगी और तैयार वस्तुओं को अधिक दामों में बेचने की व्यवस्था करेगी। यह काम आरंभ करना पड़ा तो पहले-पहल इसके लिए बहुत अधिक समय देना होगा।

बंगाल में बटन-निर्माण गृह-उद्योग के रूप में ही चल रहा है। बहुतों का खयाल है कि बंगाल के बटन फैक्टरी में बनते हैं किंतु वास्तव में ऐसा नहीं है। गाँव-देहात के घर-घर में, फुरसत के समय, यहाँ तक कि रसोई के समय में से बचे खाली समय में भी, स्त्रियाँ यह काम करती रहती हैं इसीलिए इतने सस्ते में यह बटन मिलते हैं।

— दक्षिण कलकत्ता सेवक-समिति के उप-मंत्री, श्री अनिलचंद्र विश्वास को मांडले जेल से लिखे गए सुभाषचंद्र बोस के पत्र से।

© KTES NOT TO BE REPUBLISHED



साझी समझ

उपर्युक्त पत्र में नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने गृह एवं कुटीर उद्योग की बात की है। यह पत्र देश की स्वतंत्रता से पहले लिखा गया था। अपने आस-पास के गृह एवं कुटीर उद्योगों के विषय में अपने साथियों के साथ चर्चा कीजिए।



खोजबीन के लिए

नीचे दी गई इंटरनेट कड़ी का प्रयोग करके आप सुभाषचंद्र बोस पर आधारित फिल्म देख सकते हैं।

https://www.youtube.com/watch?v=u_zmDD54dU4

- 'आजाद हिंद फौज' के विषय में और अधिक जानकारी जुटाइए और अपनी कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

@KTBS
NOT TO BE REPUBLISHED

'ब्रेल भारती' हिंदी वर्ण व गिनती

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ
औ	ं	ः							
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	श
ष	स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ				
ड़	ढ़	ऽ	ॅ	◌	ँ	ॡ	ऑ		

१	२	३	४	५
६	७	८	९	०

NOT TO BE REPUBLISHED @KTBS

Sexual Abuse of Children and Punishments under the Protection of Children from Sexual Offences Act, 2012

As per Section 2(d) of the POCSO Act, 2012,
A "Child" means any person below the age of 18 years.

Sexual Offence	Punishment
Penetrative Assault – Any person who commits penetrative sexual assault on a child. (Section 3)	Rigorous imprisonment not less than 10 years, which may extent to life imprisonment, and fine. (Section 4)
Aggravated Penetrative Sexual Assault – Penetrative sexual assault committed under aggravated circumstances. (Section 5)	Rigorous imprisonment not less than 20 years, which may extend to life imprisonment or death, and fine. (Section 6)
Sexual Assault – Touching the private parts of a child or making the child touch any person for sexual intent. (Section 7)	Imprisonment not less than 3 years, which many extents to 5 years, and fine. (Section 8)
Aggravated Sexual Assault – Sexual assault committed under aggravated circumstances. (Section 9)	Imprisonment not less than 5 years, which may extend to 7 years, and fine. (Section 10)
Sexual Harassment of a Child (Section 11)	Imprisonment which may extend to 3 years, and fine. (Section 12)
Use of a Child for Pornographic Purposes (Section 13)	Imprisonment up to 5 years and fine; higher punishment for subsequent offences. (Section 14)
Storage or Possession of Pornographic Material Involving a Child (Section 15)	Imprisonment and fine as prescribed, which may extend to 3 years.
Abetment of an Offence under POCSO (Section 16)	Punishment prescribed for the offence abetted. (Section 17)

NOT TO BE REPUBLISHED © KSCPCR

Necessary Steps to Be Taken in Case of Sexual Abuse of a Child

- Any person having knowledge of a sexual offence must report the matter immediately to the Special Juvenile Police Unit (SJPU) or the Local Police Station. (Section 19)
- The Child shall be produced before the Child Welfare Committee (CWC) or the Special Court within 24 hours for care and protection.
- The child shall be provided medical examination and treatment immediately, free of cost., at the nearest hospital.
- In case of a girl child, medical examination shall be conducted by a female doctor, as far as possible, in the presence of parents or a trusted person. (Section 27)
- The identity of the child shall not be disclosed through any media, including name, address, photograph, or any identifying details. (Section 23)
- As per Rule 7 of the Protection of Children from Sexual Offences Rules, 2020, where an interim compensation to meet the immediate needs of the child.
- As per Section 44 of the Protection of Children from Sexual Offences Act, 2012, the Karnataka State commission for Protection of Child Rights (KSCPCR) shall monitor the effective implementation of the provisions of the Act.

Our Commitment
Towards a Violence-Free and Child-Sate Society

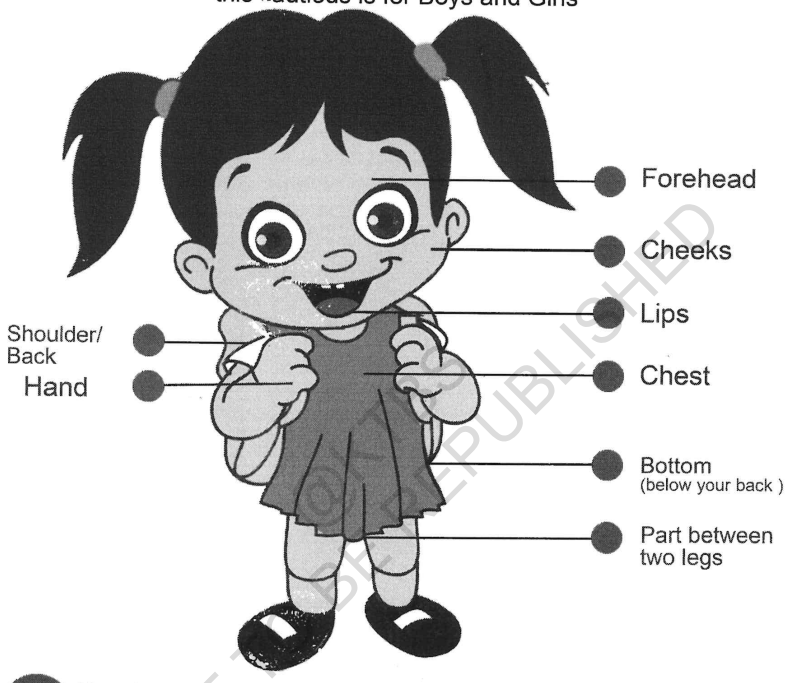


Children be cautious !!! Be alert

Your body belongs only to you, You have all the rights to keep safe and protect it always.
Safe and Unsafe touches on your body

See the picture and understand

this cautious is for Boys and Girls



Unsafe Touch (BAD TOUCH) – **parts of your body where nobody should touch (except parents and in their presence only doctors can touch)**

Safe touch (GOOD TOUCH) **–can touch only when required**

When you feel Unsafe Touch or any other mischief, please Say loudly NO.. Don't.. Stop it..and Scream, push the person aside and move to a safer place, be brave and inform about it, to your parents & Trusted adult and register a complaint

Published by :Distict Administration -08532-229011, Zilla Panchyat-228448
Department of Police –235635/ 235001 / 235100 / 100 /1091 District Child Protection Unit–280670,
Department of Women and Child Develpoment–226292, Unicef Child Protection Project –230610. Raichur

Be Smart, Be Safe, Be Happy

Picture courtesy : Prajavani, Bhoomika 26-07-2014

unicef

NOT TO BE REPUBLISHED